प्रश्नपत्र 3 : लागत लेखांकन एवं वित्तीय प्रबंधन

(PAPER 3 : COST ACCOUNTING AND FINANCIAL MANAGEMENT)

भाग I : लागत लेखांकन

प्रश्न

सामग्री

1. आदित्य लिमिटेड एक उत्पाद 'एक्स' का उत्पादन कच्ची सामग्री 'डी' का उपयोग करते हुए करता है। 'एक्स' की एक इकाई उत्पादन के लिए 2 किग्रा 'डी' की आवश्यकता होती है। कम्पनी द्वारा आयोजित बिक्री पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले वर्ष में 'एक्स' की 10,000 इकाइयों की बिक्री करने में सक्षम होगी। 'डी' कच्ची सामग्री की सूचनाएं निम्नलिखित हैं :

   (i) पुनः आदेश को मात्रा आर्थिक आदेश को मात्रा से 200 किग्रा कम है।

   (ii) प्रतिदिन अधिकतम उपयोग प्रतिदिन औसत उपयोग से 20 किग्रा अधिक है।

   (iii) यहाँ पर प्रारम्भिक स्टॉक 1,000 किग्रा है।

   (iv) पूर्तीकर्ता से कच्ची सामग्री प्राप्त करने में लगने वाला समय 4 से 8 दिन है।

   (v) क्रय मूल्य ₹ 125 प्रति किग्रा है।

   यहाँ पर 'एक्स' के तैयार माल का प्रारंभिक स्टॉक 900 इकाइयां हैं।

   नकद साख सुविधा पर बैंक 13.76 प्रतिशत ब्याज वसूल करती है।

   एक आदेश देने पर पेपर और दस्तावेज कार्य के ₹ 720 लगते हैं।

   उपरोक्त सूचनाओं से सामग्री 'डी' के संबंध में निम्नलिखित को ज्ञात कीजिएः

   (अ) पुनः आदेश मात्रा

   (ब) अधिकतम स्टॉक स्तर

   (स) न्यूनतम स्टॉक स्तर

   (द) आर्थिक आदेश मात्रा का आदेश नहीं देने पर कंपनी की लाभदायकता पर प्रभाव की गणना कीजिए। (वर्ष में 364 दिन लेने हैं)

श्रम

2. कोरस परामर्श लिमिटेड बीपीओ उद्योग में कार्यरत है। कार्मिक विभाग के प्रशिक्षु अधिकारियों में से एक ने आवागमन (प्रवाह) विधि (Flux Method) का उपयोग करते हुए पिछले वर्ष श्रम आवर्त्त दर 24.92 प्रतिशत की गणना की गयी है।

   कार्मिक विभाग द्वारा पिछले वर्ष के उपलब्ध कराये गये समंक निम्नलिखित हैं :

कर्मचारी	प्रारंभ में	शामिल हुए	छोड़ गये	अंत में
डेटा प्रोसेसर्स	540	1,080	60	1,560
पेरोल प्रोसेसर्स	?	20	60	40

© The Institute of Chartered Accountants of India

पर्यवेक्षकों	?	60	–	?
वॉइज एजेंट्स	?	20	20	?
सहायक प्रबंधक	?	20	–	30
वरिष्ठ वॉइज एजेंट्स	4	–	–	12
वरिष्ठ डेटा प्रोसेसर्स	8	–	–	34
टीम के नेता	?	–	–	?
सहायक कम्पनी से स्थानांतरित कर्मचारी				
वरिष्ठ वॉइज एजेंट्स	–	8	–	–
वरिष्ठ डेटा प्रोसेसर्स	–	26	–	–
सहायक कम्पनी को हस्तांतरित कर्मचारी				
टीम के नेता	–	–	60	–
सहायक प्रबंधक	–	–	10	–

साल के प्रारंभ में कंपनी के पेरोल में कुल 772 कर्मचारी थे। पर्यवेक्षकों, वॉइज एजेन्टों और सहायक प्रबंधकों की प्रारंभिक संख्या का अनुपात 3 : 3 : 2 था।

कम्पनी ने टीम नेता के पदों का परित्याग करने का निश्चय किया और इसके परिणामस्वरूप सभी टीम नेताओं का स्थानान्तरण सहायक कम्पनी में कर दिया गया।

कम्पनी और उसकी सहायक अलग लेखा पुस्तकों का सेट रखती है और अलग कार्मिक विभाग है।

आपसे गणनाएं अपेक्षित हैं :

(अ) प्रतिस्थापना विधि और पृथक्करण विधि का उपयोग करते हुए श्रमिक आवर्त दर।

(ब) कोरस परामर्श लिमिटेड के प्रशिक्षु अधिकारी द्वारा आवागमन (प्रवाह) विधि से गणना की गयी श्रम आवर्त्त दर को सत्यापित करें।

उपरिव्यय

3. 31 मार्च, 2014 को यूनियन लिमिटेड के खातों में शेष राशि और प्रत्यक्ष प्रभार का वितरण निम्नलिखित है :

	कुल	उत्पादन विभाग		सेवा विभाग	
		मशीन वर्कशाप	पैकिंग	सामान्य संयंत्र	स्टोर्स
आबंटित उपरिव्यय :	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)
अप्रत्यक्ष श्रम	29,000	8,000	6,000	4,000	11,000
सामग्री का रखरखाव	9,900	3,400	1,600	2,100	2,800

© The Institute of Chartered Accountants of India

विविध आपूर्ति	5,900	1,500	2,900	900	600
पर्यवेक्षक का वेतन	16,000	–	–	16,000	–
लागत और पेरोल वेतन	80,000	–	–	80,000	–

उपरिव्ययों को अनुभाजन किया जाना है :

	₹
शक्ति	78,000
किराया	72,000
ईंधन और ऊष्मा	60,000
बीमा	12,000
कर	8,400
मूल्य ह्रास	1,20,000

पिछले वर्ष में किए गये कारखाना सर्वेक्षण के माध्यम से निम्न समंकों को संकलित किया गया था :

	फर्श क्षेत्रफल	रेडियेटर विभाग	कर्मचारियों की संख्या	विनियोग	अश्व शक्ति
मशीन शॉप	2,000 वर्गफुट	45	20	8,00,000	3,500
पैकिंग	800 वर्गफुट	90	12	2,40,000	500
सामान्य संयंत्र	400 वर्गफुट	30	4	80,000	–
स्टोर्स एवं रखरखाव	1,600 वर्गफुट	60	8	1,60,000	1,000

स्टोर्स विभाग पर प्रभारित व्यय अन्य विभागों में निम्नलिखित प्रतिशत में वितरित किये जा रहे हैं :

मशीन शॉप 50 प्रतिशत, पैकिंग 20 प्रतिशत, सामान्य संयंत्र 30 प्रतिशत।

सामान्य संयंत्र उपरिव्ययों का वितरण कर्मचारियों की संख्या के आधार पर किया गया है।

(अ) गणनाएं एवं वितरण के आधार को दर्शाते हुए उपरिव्यय वितरण विवरण पत्र मय समर्थित अनुसूची के तैयार कीजिए।

(ब) युगपत् समीकरण विधि द्वारा सेवा विभाग वितरण को निर्धारित कीजिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

असमाकलित लेखांकन

4. 31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए एक कम्पनी की वित्तीय पुस्तकों से निम्न समंकों का पता चलता है :

	₹
प्रारंभिक स्टॉक :	
तैयार माल 875 इकाइयाँ	76,525
अर्द्ध निर्मित कार्य/चालू कार्य	33,000
01.04.2013 से 31.03.2014	
कच्ची सामग्री उपभोग	7,84,000
प्रत्यक्ष श्रम	4,65,000
कारखाना उपरिव्यय	2,65,000
ख्याति अपलेखन	95,000
प्रशासनिक उपरिव्यय	3,15,000
ब्याज चुकाया	72,000
डूबत ऋण	21,000
विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय	65,000
ब्याज प्राप्ति	18,500
किराया प्राप्ति	72,000
बिक्री 14,500 इकाइयाँ	20,80,000
अंतिम स्टॉक : तैयार माल 375 इकाइयाँ	43,250
चालू कार्य (WIP)	48,200

लागत अभिलेखे निम्न प्रकार उपलब्ध हैं :

कारखाना उपरिव्यय प्रत्यक्ष श्रम के 60% पर अवशोषित किये गये हैं। प्रशासनिक उपरिव्यय कारखाना लागत पर 20% वसूल किये गये हैं।

विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय बिक्रीत इकाइयों पर ₹ 5 प्रति इकाई प्रभारित किये गये हैं।

प्रारंभिक स्टॉक का मूल्यांकन ₹ 105 प्रति इकाई किया गया है।

कम्पनी के वित्तीय एवं लागत दोनों लाभों के प्रतिवेदन में चालू कार्य का मूल्यांकन कारखाना लागत पर किया गया है।

अपेक्षित :

(i) 31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष का विवरण पत्र बनाइये, यह दर्शाते हुए :
- – वित्तीय अभिलेखों के अनुसार लाभ
- – लागत अभिलेखों के अनुसार लाभ

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) लागत अभिलेखों के लाभ एवं वित्तीय अभिलेखों के लाभों के मिलान का विवरण पत्र प्रस्तुत कीजिए।

ठेका लागत विधि

5. ड्रीम हाउस (पी) लिमिटेड शहर में दो रिहायशी आवास परियोजनाओं के निर्माण में लगी हुई है। दो आवासीय परियोजनाओं से संबंधित विवरण नीचे दिये गये हैं :

	एचपी–1 (₹)	एचपी–2 (₹)
1 अप्रैल, 2013 को चालू कार्य	7,80,000	2,80,000
सामग्री क्रय	6,20,000	8,10,000
एक कार्यालय खोलने के लिए कार्यस्थल के पास भूमि खरीदी	–	12,00,000
उपरोक्त क्रय पर दलाली व पंजीकरण शुल्क चुकाया	–	60,000
मजदूरी चुकायी	85,000	62,000
31 मार्च, 2014 को अदत मजदूरी	12,000	8,400
स्थानीय क्लबों को दान दिया	5,000	2,500
1 अप्रैल, 2013 से संयंत्र का 3 वर्ष का किराया चुकाया	72,000	57,000
31 मार्च, 2014 को कार्य स्थल पर सामग्री का मूल्य	47,000	52,000
परियोजनाओं का ठेका मूल्य	48,00,000	36,00,000
प्रमाणित कार्य का मूल्य	20,50,000	16,10,000
अप्रमाणित कार्य	1,90,000	1,40,000

एक कंक्रीट मिश्रण मशीन 1 अप्रैल, 2013 को ₹ 8,20,000 में क्रय की गयी और एचपी–1 के लिए 180 दिनों एवं एचपी–2 के लिए 100 दिनों तक इस्तेमाल की गयी। मूल्य ह्रास की दर 15 प्रतिशत वार्षिक दी गयी है। (यह मशीन अन्य परियोजनाओं में भी इस्तेमाल की जा सकती है)।

ठेका अनुबंध की शर्तों के अनुसार ठेकेदाता प्रमाणित कार्य का 20 प्रतिशत प्रतिधारण राशि के रूप में रखेगा।

31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए प्रत्येक परियोजना पर लाभ या हानि दर्शाते हुए दो रिहायशी परियोजनाओं के ठेके खाते तैयार कीजिए।

प्रक्रिया लागत विधि

6. प्रक्रिया–1 से संबंधित अक्टूबर 2014 के निम्न समंक उपलब्ध हैं :

(1) अर्द्धनिर्मित कार्य का प्रारंभिक स्टॉकः 600 इकाइयाँ, कुल लागत ₹ 4,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) प्रारंभिक अर्द्धनिर्मित कार्य का पूर्णता स्तर :

सामग्री	100 प्रतिशत
श्रम	60 प्रतिशत
उपरिव्यय	60 प्रतिशत

(3) 9,200 इकाइयों के लिए निवेशित सामग्री की कुल लागत ₹ 55,200

(4) प्रत्यक्ष श्रम लागत ₹ 18,600 हुई

(5) उपरिव्यय ₹ 8,630

(6) रद्द की गयी 200 इकाइयाँ। इन इकाइयों का पूर्णता स्तर निम्न था :

सामग्री	100 प्रतिशत
श्रम	80 प्रतिशत
उपरिव्यय	80 प्रतिशत

(7) अर्द्धनिर्मित कार्य का अंतिम स्टॉक 700 इकाइयाँ। इन इकाइयों का पूर्णता स्तर निम्न था :

सामग्री	100 प्रतिशत
श्रम	70 प्रतिशत
उपरिव्यय	70 प्रतिशत

(8) अगली प्रक्रिया में तैयार एवं हस्तांतरित 8,900 इकाइयाँ थीं।

(9) सामान्य हानि कुल निवेशित का 4 प्रतिशत है (प्रारम्भिक स्टॉक + निवेशित इकाइयाँ)

(10) रद्द की गयी इकाइयों का मूल्य ₹ 6 प्रति इकाई।

आपसे अपेक्षित है :

(अ) समतुल्य उत्पादन की गणना।

(ब) प्रतयेक तत्व की समतुल्य इकाई की लागत ज्ञात करें।

(स) असामान्य हानि (अथवा लाभ), अंतिम अर्द्धनिर्मित इकाइयाँ और अगली प्रक्रिया में हस्तांतरण की जाने वाली इकाइयों की फीफो (FIFO) विधि से लागत की गणना कीजिए।

प्रमाप लागत विधि

7. एबीसी लिमिटेड ने अप्रैल महीने का निम्न आकलन तैयार किया था:

	मात्रा	दर (₹)	राशि (₹)
सामग्री–अ	800 किग्रा	45.00	36,000
सामग्री–ब	600 किग्रा	30.00	18,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

कुशल श्रम	1,000 घंटे	37.50	37,500
अकुशल श्रम	800 घंटे	22.00	17,600

सामान्य हानि कुल इनपुट माल का 10 प्रतिशत होने की संभावना थी और निष्क्रिय श्रम घंटे संभावित श्रम घंटों के 5 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया था।

माह के अंत में, लागत लेखा विभाग से निम्न सूचनाएं एकत्रित की गयीं।

निम्न का उपयोग करते हुए कम्पनी द्वारा 1,480 किग्रा तैयार माल का उत्पादन तैयार किया गया :

	मात्रा	दर (₹)	राशि (₹)
सामग्री–अ	900 किग्रा	43.00	38,700
सामग्री–ब	650 किग्रा	32.50	21,125
कुशल श्रम	1,200 घंटे	35.50	42,600
अकुशल श्रम	860 घंटे	23.00	19,780

आपसे गणना अपेक्षित है :

(अ) सामग्री लागत विचरण,

(ब) सामग्री मूल्य विचरण,

(स) सामग्री मिश्रण विचरण,

(द) सामग्री उत्पादन विचरण,

(य) श्रम लागत विचरण,

(र) श्रम कुशलता विचरण, और

(ल) श्रम उत्पादन विचरण।

सीमांत लेखाविधि

8. अरनव लिमिटेड अपने उत्पाद आर–9 का निर्माण एवं बिक्री करते हैं। उत्पाद आर–9 के लिए निम्नलिखित आंकड़े पिछले वर्ष के लागत लेखों से एकत्र किये गये :

लागत के तत्व	परिवर्तनशील लागत का भाग	स्थिर लागत (₹)
प्रत्यक्ष सामग्री	बेचे गये माल की लागत का 30%	–
प्रत्यक्ष श्रम	बेचे गये माल की लागत का 15%	–
कारखाना उपरिव्यय	बेचे गये माल की लागत का 10%	2,30,000
सामान्य एवं प्रशासनिक उपरिव्यय	बेचे गये माल की लागत का 2%	71,000
बिक्री एवं वितरण उपरिव्यय	बिक्री की लागत का 4%	68,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

पिछले वर्ष 5,000 इकाइयों का विक्रय ₹ 185 प्रति इकाई पर किया गया था। दिये गये समंकों से निम्न की गणना कीजिए :

(अ) समविच्छेद विक्रय (₹ में)

(ब) पिछले वर्ष के दौरान कमाया गया लाभ

(स) सुरक्षा सीमा (प्रतिशत में)

(द) लाभ, यदि बिक्री वास्तविक बिक्री से 10 प्रतिशत कम हो।

बजट और बजटरी नियंत्रण

9. एस लिमिटेड ने आने वाले वर्ष के लिए अपने दो उत्पाद अ और ब के लिए बजट तैयार किया है :

	उत्पाद अ (₹)	उत्पाद ब (₹)
उत्पादन एवं बिक्री की इकाइयाँ	6,000 इकाइयां	9,000 इकाइयां
कच्ची सामग्री लागत प्रति इकाई	60.00	42.00
प्रत्यक्ष श्रम लागत प्रति इकाई	30.00	18.00
परिवर्तनशील उपरिव्यय प्रति इकाई	12.00	6.00
स्थायी उपरिव्यय प्रति इकाई	8.00	4.00
विक्रय मूल्य प्रति इकाई	120.00	78.00

कुछ विपणन प्रयासों के बाद उत्पाद अ और ब की विक्रय मात्रा क्रमशः 1,500 इकाइयों और 500 इकाइयों से बढ़ायी जा सकती है। लेकिन इस उद्देश्य के लिए दोनों उत्पादों के परिवर्तनशील उपरिव्यय एवं स्थायी उपरिव्यय क्रमशः 10% और 5% से बढ़ जायेंगे।

आप से दोनों उत्पादों के लिए लचीला बजट तैयार करने की अपेक्षा है :

(अ) विपणन प्रयासों से पहले

(ब) विपणन प्रयासों के बाद।

विविध

10. (अ) अ लिमिटेड चीनी उत्पादन में लगी हुई है। जबकि चीनी उत्पाद में गुड़ भी उत्पादित होता है। गुड़ की चीनी का उप (गौण) उत्पाद के रूप में पहचान की जाती है। अ लिमिटेड की लागत लेखों में गुड़ के लेखा व्यवहार का सुझाव दीजिए।

(ब) जेड लिमिटेड उत्पाद 'जेड जेड' बैच (batch) में उत्पादित करता है। जेड लिमिटेड का प्रबंधन यह जानना चाहता है कि 'जेड जेड' उत्पाद के कितने समूहों (batches) का उत्पादन किया जाये जहाँ पर समूह लगाने की लागत और रखने की लागत का अनुकूलतम स्तर (Optinum level) हो।

(स) स्टील हार्ट प्राइवेट लिमिटेड एमएस इनगोट्स और एमएस बिलेट्स से टीमटी बार बनाती है। टीएमटी बार के निर्माण के बाद, छंटाई करके दोषों को और उन

© The Institute of Chartered Accountants of India

इकाइयों का पता लगाया जाता है जो प्रमाप उत्पाद विनिर्देशों से मेल नहीं खाते हैं। उत्पाद जो प्रमाप उत्पाद से मिलान नहीं होते, उनको अवशेष की तरह व्यवहार किया जाता है। आपसे उन उत्पादों के लेखा व्यवहार को जानने की अपेक्षा की जाती है जो उत्पाद लागत लेखों में दिये गये विनिदेशों से मेल नहीं खाते।

(द) लागत योग ठेके क्या हैं? इसके लाभों को बताइये।

सुझाएवित संकेत/उत्तर

1. कार्यशील टिप्पणियाँ

(i) कच्चे माल 'डी' के लिए वार्षिक उपयोग और वार्षिक मांग की गणना

उत्पाद 'एक्स' के लिए बिक्री का पूर्वानुमान	10,000 इकाइयाँ
घटाइये : 'एक्स' का प्रारंभिक स्टॉक	900 इकाइयाँ
'एक्स' की नयी इकाइयों का उत्पादन होना चाहिए	9,100 इकाइयाँ
'एक्स' की 9,100 इकाइयों के उत्पादन के लिए कच्ची सामग्री की आवश्यकता (9,100 × 2 किग्रा)	18,200 किग्रा
घटाइये : 'डी' का प्रारंभिक स्टॉक	1,000 किग्रा
कच्ची सामग्री 'डी' के लिए वार्षिक मांग	17,200 किग्रा

(ii) आर्थिक आदेश की मात्रा की गणना (EOQ)

$$\text{आर्थिक आदेश की मात्रा (EOQ)} = \sqrt{\frac{2 \times \text{'डी' की वार्षिक मांग} \times \text{आदेश की लागत}}{\text{रखरखाव की लागत प्रति इकाई प्रतिवर्ष}}}$$

$$= \sqrt{\frac{2 \times 17,200 \text{ किग्रा} \times ₹ 720}{₹ 125 \times 13.76\%}} = \sqrt{\frac{2 \times 17,200 \text{ किग्रा} \times ₹ 720}{₹ 17.2}} = 1,200 \text{ किग्रा}$$

(iii) पुनः आदेश मात्रा

= (अधिकतम उपभोग प्रतिदिन × अधिकतम प्रतीक्षा अवधि)

$$= \left\{\left(\frac{\text{'डी' का वार्षिक उपयोग}}{364 \text{ दिन}} + 20 \text{ किग्रा.}\right) \times 8 \text{ दिन}\right\}$$

$$= \left\{\left(\frac{18,200 \text{ किग्रा.}}{364 \text{ दिन}} + 20 \text{ किग्रा.}\right) \times 8 \text{ दिन}\right\} = 560 \text{ किग्रा}$$

(iv) डी की कच्ची सामग्री का न्यूनतम उपभोग प्रतिदिन

प्रतिदिन औसत उपभोग = 50 किग्रा

अतः प्रतिदिन अधिकतम उपभोग = 50 किग्रा + 20 किग्रा = 70 किग्रा

© The Institute of Chartered Accountants of India

अतः प्रतिदिन न्यूनतम उपभोग होगा

$$\text{औसत उपभोग} = \frac{\text{न्यूनतम उपभोग} + \text{अधिकतम उपभोग}}{2}$$

$$\text{अथवा, } 50 \text{ किग्रा} = \frac{\text{न्यूनतम उपभोग} + 70 \text{ किग्रा.}}{2}$$

अथवा, न्यूनतम उपभोग = 100 किग्रा − 70 किग्रा = 30 किग्रा

(अ) पुनः आदेश मात्रा :

आर्थिक आदेश मात्रा − 200 किग्रा = 1,200 किग्रा − 200 किग्रा = 1,000 किग्रा

(ब) अधिकतम स्टॉक स्तर :

= पुनः आदेश स्तर + पुनः आदेश मात्रा

− (न्यूनतम उपभोग प्रतिदिन × न्यूनतम प्रतीक्षा अवधि)

= 560 किग्रा + 1,000 किग्रा − (30 किग्रा × 4 दिन)

= 1,560 किग्रा − 120 किग्रा = 1,440 किग्रा

(स) न्यूनतम स्टॉक स्तर :

= पुनः आदेश स्तर − (औसत उपभोग प्रतिदिन × औसत प्रतीक्षा अवधि)

= 560 किग्रा − (50 किग्रा × 6 दिन) = 260 किग्रा

(द) आर्थिक आदेश मात्रा (EOQ) का आदेश नहीं देने पर कम्पनी की लाभदायकता पर प्रभाव

		जब पुनः आदेश मात्रा (ROQ) का क्रय	जब आर्थिक आदेश मात्रा (EOQ) का क्रय
I	आदेशित मात्रा	1,000 किग्रा	1,200 किग्रा
II	एक वर्ष में आदेशों की संख्या	$\frac{17,200 \text{ किग्रा.}}{1,000 \text{ किग्रा.}}$ = 17.2 या 18 आदेश	$\frac{17,200 \text{ किग्रा.}}{1,200 \text{ किग्रा.}}$ = 14.33 या 15 आदेश
III	आदेश लागत	₹ 18 × 720 = 12,960	15 आदेश × 720 = ₹ 10,800
IV	औसत इन्वेन्ट्री	$\frac{1,000 \text{ किग्रा.}}{2}$ = 500 किग्रा.	$\frac{1,200 \text{ किग्रा.}}{2}$ = 600 किग्रा.
V	रख रखाव लागत	500 किग्रा × 17.2 = ₹ 8,600	600 किग्रा × 17.2 = ₹ 10,320
VI	कुल लागत	₹ 21,560	₹ 21,120

EOQ का आदेश नहीं देने पर अतिरिक्त लागत = 21,560 − 21,120 = ₹ 440

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. कार्यशील टिप्पणियाँ :

(i) वर्ष के प्रारंभ में और अंत में कर्मचारियों की गणना

	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष की समाप्ति पर
डेटा प्रोसेसर्स	540	1,560
पेरोल प्रोसेसर्स (छोड़े–60 + अंत में–40 – नये भर्ती–20)	80	40
पर्यवेक्षक*	30	90
वॉइज एजेंटस्*	30	30
सहायक प्रबंधक*	20	30
वरिष्ठ वॉइज एजेन्ट्स	4	12
वरिष्ठ डेटा प्रोसेसर्स	8	34
टीम के नेता	60	0
कुल	**772**	**1,796**

(*) वर्ष के प्रारंभ में

पर्यवेक्षकों, वॉइज एजेन्टों और सहायक प्रबंधकों की संख्या

= [772 – {540 + 80 + 4 + 8 + 60} कर्मचारी] या [772 – 692 = 80 कर्मचारी]

[{पर्यवेक्षक = 80 × 3/8 = 30, वॉइज एजेंट = 80 × 3/8 = 30 एवं सहायक प्रबंधक = 80 × 2/8 = 20}कर्मचारी]

वर्ष के अंत में

[पर्यवेक्षक – (30 प्रारंभिक + 60 शामिल हुए = 90 वॉइज एजेंट्स – (30 प्रारंभिक + 20 नये शामिल – 20 छोड़े गये) = 30]

(ii) वर्ष के दौरान पृथक्करण, प्रतिस्थापन और नये नियुक्त कर्मचारियों की संख्या

विवरण	पृथक्करण	नयी नियुक्तियां	प्रतिस्थापन	कुल भर्ती
डेटा प्रोसेसर्स	60	1,020	60	1,080
पेरोल प्रोसेसर्स	60	–	20	20
पर्यवेक्षक	–	60	–	60
वॉइज एजेन्ट्स	20	–	20	20
सहायक प्रबंधक	10	10	10	20

© The Institute of Chartered Accountants of India

वरिष्ठ वॉइज एजेन्ट्स	–	8	–	8
वरिष्ठ डेटा प्रोसेसर्स	–	26	–	26
टीम के नेता	60	–	–	–
कुल	**210**	**1,124**	**110**	**1,234**

(क्योंकि, कोरस परामर्श लिमिटेड एवं उसकी सहायक, पृथक कार्मिक विभाग बनाये रखती है, अतः स्थानान्तरण इन और स्थानान्तरण आऊट को क्रमशः नियुक्तियां और पृथक्करण मानकर व्यवहार किया गया है।)

(अ) श्रमिक आवर्त की गणना

$$\text{प्रतिस्थापन विधि} = \frac{\text{वर्ष के दौरान प्रतिस्थापन किये गये कर्मचारियों की संख्या}}{\text{रोल पर औसत कर्मचारियों की संख्या}} \times 100$$

$$= \frac{110}{(772 + 1{,}796)/2} \times 100$$

$$= \frac{110}{1{,}284} \times 100 = 8.57\%$$

$$\text{पृथक्करण विधि} = \frac{\text{वर्ष के दौरान छोड़कर गये कर्मचारियों की संख्या}}{\text{रोल पर औसत कर्मचारियों की संख्या}} \times 100$$

$$= \frac{210}{1{,}284} \times 100 = 16.36\%$$

(ब) आवागमन विधि (प्रवाह) के तहत श्रमिक आवर्त

$$= \frac{\text{कर्मचारियों की संख्या (नियुक्ति + नयी नियुक्ति + पृथक्करण) वर्ष के दौरान}}{\text{रोल पर कर्मचारियों की संख्या}} \times 100$$

$$= \frac{1{,}234 + 210}{1{,}284} \times 100 = 112.46\%$$

कार्मिक विभाग के प्रशिक्षु अधिकारी द्वारा गणना किया गया श्रमिक आवर्त गलत है क्योंकि उसने आवागमन विधि से श्रमिक आवर्त गणना करने में नयी नियुक्तियों को शामिल नहीं किया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. (अ) उपरिव्यय वितरण का विवरण

	उत्पादन विभाग		सेवा विभाग	
	मशीन शॉप	पैकिंग	सामान्य संयंत्र	स्टोर्स
आबंटित उपरिव्यय :	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)
अप्रत्यक्ष श्रम	8,000	6,000	4,000	11,000
सामग्री रखरखाव	3,400	1,600	2,100	2,800
विविध आपूर्ति	1,500	2,900	900	600
पर्यवेक्षकों का वेतन	–	–	16,000	–
लागत एवं पेरोल वेतन	–	–	80,000	–
कुल आंटित उपरिव्यय	12,900	10,500	1,03,000	14,400
जोड़िये : अनुभाजित उपरिव्यय (नीचे दी गयी अनुसूची)	1,84,350	70,125	22,775	73,150
	1,97,250	80,625	1,25,775	87,550

उपरिव्ययों के अनुभाजन की अनुसूची

लागत के तत्व	आधार	उत्पादन विभाग		सेवा विभाग	
		मशीन शॉप	पैकिंग	सामान्य संयंत्र	स्टोर्स
		(₹)	(₹)	(₹)	(₹)
शक्ति	अश्व शक्ति घंटे (7 : 1 : – : 2)	54,600	7,800	–	15,600
किराया	फर्श क्षेत्रफल (5 : 2 : 1 : 4)	30,000	12,000	6,000	24,000
ईंधन एवं ऊष्मा	रेडियेटर विभाग (3 : 6 : 2 : 4)	12,000	24,000	8,000	16,000
बीमा	विनियोग (10 : 3 : 1 : 2)	7,500	2,250	750	1,500
कर	विनियोग (10 : 3 : 1 : 2)	5,250	1,575	525	1,050
ह्रास	विनियोग (10 : 3 : 1 : 2)	75,000	22,500	7,500	15,000
		1,84,350	**70,125**	**22,775**	**73,150**

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ब) सेवा विभागों के उपरिव्ययों का उत्पादन विभागों में पुनः वितरण : माना, सामान्य संयंत्र के कुल उपरिव्यय = अ और स्टोर्स के कुल उपरिव्यय = ब

अ = 1,25,775 + 0.3 ब ...(i)

ब = 87,550 + 0.2 अ ...(ii)

समीकरण (i) में 'ब' के मूल्यों को रखने पर,

अ = 1,25,775 + 0.3 (87,550 + 0.2 अ)

अथवा अ = 1,25,775 + 26,265 + 0.06 अ

अथवा 0.94अ = 1,52,040 अथवा अ = 1,61,745 (लगभग)

अ का मूल्य = 1,61,745 को समीकरण संख्या (ii) में रखने पर ब का प्राप्त मूल्य,

ब = 87,550 + 0.02 × 1,61,745 = 1,19,899

द्वितीयक वितरण सार

वितरण	कुल (₹)	मशीन वर्कशॉप (₹)	पैकिंग (₹)
प्राथमिक वितरण के अनुसार आबंटित एवं अनुभाजित उपरिव्यय	2,77,875	1,97,250.00	80,625.00
– सामान्य संयंत्र	1,61,745	80,872.50 (1,61,745 × 5/10)	48,523.50 (1,61,745× 3/10)
– स्टोर्स	1,19,899	59,949.50 (1,19,899 × 50%)	23,979.80 (1,19,899 × 20%)
		3,38,072.00	1,53,128.30

4. (i)

वित्तीय लेखों के अनुसार लाभ का विवरण

(31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए)

	(₹)		(₹)
प्रारंभिक स्टॉक :		बिक्री	20,80,000
तैयार माल	76,525	अंतिम स्टॉक	
अर्द्धनिर्मित प्रक्रिया	33,000	तैयार माल	43,250
सामग्री उपयोग	7,84,000	अर्द्धनिर्मित प्रक्रिया	48,200
प्रत्यक्ष श्रम	4,65,000	किराया प्राप्ति	72,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

कारखाना उपरिव्यय	2,65,000	ब्याज प्राप्ति	18,500
ख्याति अपलेखन	95,000		
प्रशासनिक उपरिव्यय	3,15,000		
विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय	65,000		
ब्याज चुकाया	72,000		
डूबत ऋण	21,000		
लाभ	70,425		
	22,61,950		**22,61,950**

लागत लेखों के अनुसार लाभ का विवरण

(31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए)

		(₹)	(₹)
बिक्री राजस्व (14,500 इकाइयाँ)	(अ)		20,80,000
बिक्री की लागत :			
प्रारंभिक स्टॉक (875 इकाइयाँ × ₹ 105)		91,875	
जोड़िये : 14,000 इकाइयों की उत्पादन लागत (कार्यशील टिप्पणी 1 और 2 देखें)		18,15,360	
घटाइये : अंतिम स्टॉक $\left(\frac{₹\ 18,15,360 \times 375 \text{ इकाइयाँ}}{14,000 \text{ इकाइयाँ}}\right)$		(48,626)	
बेचे गये माल की उत्पादन लागत (14,500 इकाइयाँ)		18,58,609	
विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय (14,500 इकाइयाँ × 5)		72,500	
बिक्री की लागत	(ब)	19,31,109	19,31,109
लाभ (अ – ब)			1,48,891

(ii)

समाधान विवरण पत्र

(लागत लेखों के अनुसार लाभ का वित्तीय लेखों के अनुसार लाभ से मिलान)

	(₹)	(₹)
लागत लेखों के अनुसार लाभ		1,48,891
जोड़िये : अधिअवशोषित कारखाना उपरिव्यय (₹ 2,79,000 – ₹ 2,65,000)	14,000	

© The Institute of Chartered Accountants of India

अधि–अवशोषित विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय (₹ 72,500 – ₹ 65,000)	7,500	
प्रारंभिक स्टॉक का अधिक मूल्यांकन (₹ 91,875 – ₹ 76,525)	15,350	
ब्याज प्राप्त	18,500	
किराया प्राप्त	72,000	1,27,350
		2,76,241
घटाइये: प्रशासनिक उपरिव्ययों के न्यून वसूली (₹ 3,15,000 – ₹ 3,02,560)	12,440	
अंतिम स्टॉक का अधिमूल्यांकन (₹ 48,626 – ₹ 43,250)	5,376	
ख्याति का अपलेखन	95,000	
ब्याज चुकाया	72,000	
डूबत ऋण	21,000	2,05,816
वित्तीय लेखों के अनुसार लाभ		70,425

कार्यशील टिप्पणियां :

1. **उत्पादित की गयी इकाइयाँ**

	इकाइयाँ
बिक्री	14,500
जोड़िये : अंतिम स्टॉक	375
कुल	14,875
घटाइये : प्रारंभिक स्टॉक	875
उत्पादित की गयी इकाइयों की संख्या	14,000

2. **लागत पत्र**

	(₹)
कच्ची सामग्री का उपयोग	7,84,000
प्रत्यक्ष श्रम	4,65,000
मूल लागत	12,49,000
कारखाना उपरिव्यय (प्रत्यक्ष मजदूरी का 60%)	2,79,000
कारखाना लागत	15,28,000
जोड़िये : अर्द्धनिर्मित कार्य का प्रारंभिक स्टॉक	33,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

घटाइये : अर्द्धनिर्मित कार्य का अंतिम स्टॉक	(48,200)
उत्पादित किये गये माल की कारखाना लागत	15,12,800
प्रशासनिक उपरिव्यय (कारखाना लागत का 20%)	3,02,560
14,000 इकाइयों की उत्पादन लागत	18,15,360

उत्पादन लागत प्रति इकाई

$$= \frac{\text{कुल उत्पादन लागत}}{\text{उत्पादित इकाइयाँ}} = \frac{₹\ 18,15,360}{14,000\ \text{इकाइयाँ}} = ₹\ 129.67$$

5. 31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष का ठेका खाता

डेबिट क्रेडिट

विवरण	एचपी–1	एचपी–2	विवरण	एचपी–1	एचपी–2
प्रारंभिक शेष :			कार्य स्थल पर		
चालू कार्य	7,80,000	2,80,000	सामग्री अंत में	47,000	52,000
सामग्री क्रय	6,20,000	8,10,000			
मजदूरी			अर्द्ध निर्मित कार्य :		
(85,000 + 12,000)	97,000		प्रमाणित कार्य की		
(62,000 + 8,400)		70,400	राशि	20,50,000	16,10,000
स्थानीय क्लबों को दान*	5,000	2,500	अप्रमाणित कार्य की		
संयंत्र किराया व्यय			लागत	1,90,000	1,40,000
(72,000 × 1/3)	24,000				
(57,000 × 1/3)		19,000			
कंक्रीट मिश्रण मशीन पर ह्रास**					
(8,20,000 × 15% × 180/365)	60,658				
(8,20,000 × 15% × 100/365)		33,699			
काल्पनिक लाभ	7,00,342	5,86,401			
	22,87,000	**18,02,000**		**22,87,000**	**18,02,000**
लागत लाभ–हानि खाता (टिप्पणी 2)	1,86,758	1,56,374	काल्पनिक लाभ	7,00,342	5,86,401
लागत लाभ–हानि संचय खाता	5,13,584	4,30,027			
	7,00,342	**5,86,401**		**7,00,342**	**5,86,401**

© The Institute of Chartered Accountants of India

*यह मानते हुए कि स्थानीय क्लबों को दिया गया दान केवल उपरोक्त परियोजनाओं के लिए था अतः इसे ठेका खाते में शामिल किया गया है।

**कंक्रीट मिश्रण मशीन पर ह्रास परियोजनाओं में उपयोग किये गये दिनों के आधार पर वसूल किया गया है। यह प्रश्न में साफ तौर पर बताया गया है कि मशीन अन्य परियोजनाओं में भी काम में ली जा सकती है।

कार्यशील टिप्पणियाँ :

1. परियोजनाओं के पूरे होने के स्तर को ज्ञात करना :

$$\frac{\text{प्रमाणित कार्य का मूल्य}}{\text{ठेका राशि}} \times 100$$

$$\text{एचपी–1} \quad \frac{₹\ 20,50,000}{₹\ 48,00,000} \times 100 = 42.71\%$$

$$\text{एचपी–2} \quad \frac{₹\ 16,10,000}{₹\ 36,00,000} \times 100 = 44.72\%$$

2. लागत लाभ–हानि खाते में ले जाये जाने वाले लाभ की राशि की गणना

$$1/3 \times \text{काल्पनिक लाभ} \times \frac{\text{नकद प्राप्ति}}{\text{प्रमाणित कार्य की राशि}}$$

$$\text{एचपी–1} \quad \frac{1}{3} \times ₹\ 7,00,342 \times 80\% = ₹\ 1,86,758$$

$$\text{एचपी–2} \quad \frac{1}{3} \times ₹\ 5,86,401 \times 80\% = ₹\ 1,56,374$$

(भूमि क्रय एवं इस उद्देश्य से दलाली एवं रजिस्ट्रेशन फीस का भुगतान ठेका खाते में चार्ज नहीं किया जा सकता, अतः इसे ठेके खाते में शामिल नहीं किया गया है।)

6. (अ) समतुल्य उत्पादन विवरण पत्र (फीफो विधि)

इनपुट		आउटपुट		समतुल्य उत्पादन					
				सामग्री		श्रम		उपरिव्यय	
विवरण	इकाइयाँ	विवरण	इकाइयाँ	%	इकाइयाँ	%	इकाइयाँ	%	इकाइयाँ
प्रारंभिक स्टॉक	600	अगली प्रक्रिया में हस्तांतरित तैयार माल : प्रारंभिक स्टॉक से	600	–	–	40	240	40	240
		नयी सामग्री से	8,300	100	8,300	100	8,300	100	8,300

© The Institute of Chartered Accountants of India

		अंतिम अर्द्ध–निर्मित प्रक्रिया से	700	100	700	70	490	70	490
नया इनपुट	9,200	सामान्य हानि	392	–	–	–	–	–	–
			9,992		9,000		9,030		9,030
		घटाइये : असामान्य हानि	(192)	100	(192)	100	(192)	100	(192)
	9,800		9,800		8,808		8,838		8,838

(ब) समतुल्य इकाइयों का प्रति इकाई विवरण पत्र

तत्व	लागत		समतुल्य इकाइयाँ	प्रति समतुल्य इकाई लागत
	(₹)	(₹)		(₹)
सामग्री की लागत	55,200			
घटाइये : 392 इकाइयों की अवशेष वसूली दर ₹ 6 प्रति इकाई	2,352	52,848	8,808	6.00
श्रम लागत		18,600	8,838	2.10
उपरिव्यय		8,630	8,838	0.98
कुल लागत		80,078		9.08

(स) असामान्य लाभ की लागत – 192 इकाइयाँ

	(₹)	(₹)
192 इकाइयों की सामग्री लागत दर ₹ 6.00 प्रति इकाई	1,152.00	
192 इकाइयों की श्रम लागत दर ₹ 2.10 प्रति इकाई	403.20	
192 इकाइयों के उपरिव्यय दर ₹ 0.98 प्रति इकाई	188.16	1,743.36

अंतिम अर्द्धनिर्मित कार्य की लागत – 700 इकाइयां

	(₹)	(₹)
700 समतुल्य इकाइयों की सामग्री लागत दर ₹ 6.00 प्रति इकाई	4,200.00	
490 समतुल्य इकाइयों की श्रम लागत दर ₹ 2.10 प्रति इकाई	1,029.00	
490 समतुल्य इकाइयों पर उपरिव्यय दर ₹ 0.98 प्रति इकाई	480.20	5709.20

© The Institute of Chartered Accountants of India

अगली प्रक्रिया में हस्तांतरित 8,900 इकाइयों की लागत

			₹
(i)	प्रारंभिक अर्द्धनिर्मित स्टांक की लागत b/f–600 इकाइयां		4,200.00
(ii)	प्रारंभिक चालू कार्य पर लागत लगी		
	सामग्री लागत	–	
	240 समतुल्य इकाइयों पर श्रम लागत दर ₹ 2.10 प्रति इकाई	504.00	
	240 समतुल्य इकाइयों पर उपरिव्यय दर ₹ 0.98 प्रति इकाई	235.20	739.20
(iii)	8300 पूर्ण इकाइयों की लागत		
	8300 इकाइयाँ × ₹ 9.08 प्रति इकाई		75,364.00
	कुल लागत [(i) + (ii) + (iii)]		80,303.20

7. सामग्री विचरण :

सामग्री	एसक्यू (SQ) टिप्पणी–1	एसपी (SP) (₹)	एसक्यू × एसपी (SQ × SP) (₹)	आरएसक्यू (RSQ) टिप्पणी–2	आरएसक्यू × एसपी (RSQ × SP) (₹)	एक्यू (SQ)	एक्यू × एसपी (AQ × SP) (₹)	एपी (AP) (₹)	एक्यू × एपी (AQ × AP) (₹)
अ	940 किग्रा	45.00	42,300	886 किग्रा	39,870	900 किग्रा	40,500	43.00	38,700
ब	705 किग्रा	30.00	21,150	664 किग्रा	19,920	650 किग्रा	19,500	32.50	21,125
	1,645 किग्रा		63,450	1,550 किग्रा	59,790	1,550 किग्रा	60,000		59,825

टिप्पणियां :

1. प्रमापित मात्रा (SQ)

$$\text{सामग्री–अ} = \left(\frac{800 \text{ किग्रा}}{0.9 \times 1,400 \text{ किग्रा}} \times 1,480 \text{ किग्रा}\right) = 939.68 \text{ या } 940 \text{ किग्रा}$$

$$\text{सामग्री–ब} = \left(\frac{600 \text{ किग्रा}}{0.9 \times 1,400 \text{ किग्रा}} \times 1,480 \text{ किग्रा}\right) = 704.76 \text{ या } 705 \text{ किग्रा}$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. संशोधित प्रमापित इकाई (RSQ)

सामग्री–अ = $\left(\frac{800 \text{ किग्रा.}}{1,400 \text{ किग्रा.}} \times 1,550 \text{ किग्रा.}\right)$ = 885.71 या 886 किग्रा

सामग्री–ब = $\left(\frac{600 \text{ किग्रा.}}{1,400 \text{ किग्रा.}} \times 1,550 \text{ किग्रा.}\right)$ = 664.28 या 664 किग्रा

(अ) सामग्री लागत विचरण (अ + ब) = {(SQ × SP) – (AQ × AP)}
= {63,450 − 59,825} = 3,625 (F)

(ब) सामग्री मूल्य विचरण (अ + ब) = {(AQ × SP) – (AQ × AP)}
= {60,000 − 59,825} = 175 (F)

(स) सामग्री मिश्रण विचरण (अ + ब) = {(RSQ × SP) – (AQ × AP)}
= {59,790 − 60,000} = 210 (A)

(द) सामग्री उत्पादन विचरण (अ + ब) = {(SQ × SP) – (RSQ × SP)}
= {63,450 − 59,790} = 3,660 (F)

श्रम विचरण :

श्रम	एसएच टिप्पणी–3 (SH)	एसआर (SR) (₹)	एसएच × एसआर (SH × SR) (₹)	आरएसएच टिप्पणी–4 (RSH)	आरएसएच × एसआर (RSH × SR) (₹)	एएच (AH)	एएच × एसआर (AH × SR) (₹)	एआर (AR) (₹)	एएच × एआर (AH × AR) (₹)
कुशल	1,116 घंटे	37.50	41,850	1,144	42,900	1,200	45,000	35.50	42,600
अकुशल	893 घंटे	22.00	19,646	916	20,152	860	18,920	23.00	19,780
	2,009 घंटे		61,496	2,060	63,052	2,060	63,920		62,380

3. प्रमापित घंटे (SH)

कुशल श्रमिक = $\left(\frac{0.95 \times 1,000 \text{ घंटे}}{0.90 \times 1,400 \text{ किग्रा}} \times 1,480 \text{ किग्रा}\right)$ = 1,115.87 या 1,116 घंटे

अकुशल श्रमिक = $\left(\frac{0.95 \times 800 \text{ घंटे}}{0.90 \times 1,400 \text{ किग्रा}} \times 1,480 \text{ किग्रा}\right)$ = 892.69 या 893 किग्रा

4. संशोधित प्रमाप घंटे (RSH)

कुशल श्रमिक = $\left(\frac{1,000 \text{ घंटे}}{1,800 \text{ घंटे}} \times 2,060 \text{ घंटे}\right)$ = 1,144.44 या 1,144 घंटे

© The Institute of Chartered Accountants of India

अकुशल श्रमिक = $\left(\frac{800 \text{ घंटे}}{1{,}800 \text{ घंटे}} \times 2{,}060 \text{ घंटे}\right)$ = 915.56 या 916 घंटे

(इ) श्रम लागत विचरण (कुशल + अकुशल) = {(SH × SR) – (AH × AR)}
= {61,496 – 62,380} = 884 (A)

(एफ) श्रम कुशलता विचरण (कुशल + अकुशल) = {(SH × SR) – (AH × SR)}
= {61,496 – 63,920} = 2,424 (A)

(जी) श्रम उत्पादकता विचरण (कुशल + अकुशल) = {(SH × SR) – (RSH × SR)}
= {61,496 – 63,052} = 1,556 (A)

8. कार्यशील टिप्पणियाँ :

(i) बेचे गये माल की लागत की गणना (COGS) :

सीओजीएस (COGS) : = (प्रत्यक्ष सामग्री (DM)–0.3सीओजीएस) + (प्रत्यक्ष श्रम (DL)–0.15सीओजीएस) + (कारखाना उपरिव्यय (FOS)0.10 सीओजीएस + 2,30,000) + सामान्य एवं प्रशानिक उपरिव्यय G&AOH–0.2 सीओजीएस + 71,000)

या सीओजीएस = 0.57 सीओजीएस + ₹ 3,01,000

या सीओजीएस = $\frac{₹\ 3{,}01{,}000}{0.43}$ = ₹ 7,00,000

(ii) बिक्रित माल की लागत की गणना (COS) :

सीओएस (COS) = सीओजीएस + (विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय (S & DOH) –0.04 सीओएस (COS) + ₹ 68,000)

और सीओएस = ₹ 7,00,000 + (0.04 सीओएस + ₹ 68,000)

या सीओएस = $\frac{₹\ 7{,}68{,}000}{0.96}$ = ₹ 8,00,000

(iii) परिवर्तनशील लागत की गणना :

		(₹)
प्रत्यक्ष सामग्री	(0.3 × 7,00,000)	2,10,000
प्रत्यक्ष श्रम	(0.15 × 7,00,000)	1,05,000
कारखाना अपरिव्यय	(0.10 × 7,00,000)	70,000
सामान्य एवं प्रशासनिक उपरिव्यय	(0.02 × 7,00,000)	14,000
विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय	(0.04 × 8,00,000)	32,000
		4,31,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iv) कुल स्थायी लागत की गणना :

कारखाना उपरिव्यय	2,30,000
सामान्य और प्रशासनिक उपरिव्यय	71,000
बिक्री एवं वितरण उपरिव्यय	68,000
	3,69,000

(v) लाभ–मात्रा अनुपात (P/V Ratio) **की गणना**

$$\text{लाभ मात्रा अनुपात} = \frac{\text{अंशदान}}{\text{बिक्री}} \times 100 = \frac{\text{बिक्री} - \text{परिवर्तनशील लागतें}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

$$= \frac{(185 \times 5{,}000 \text{ इकाइयाँ}) - ₹\ 4{,}31{,}000}{185 \times 5{,}000 \text{ इकाइयाँ}} \times 100 = 53.41\%$$

(अ) सम–विच्छेद विक्रय

$$= \frac{\text{स्थायी लागत}}{\text{लाभ मात्रा अनुपात}} = \frac{₹\ 3{,}69{,}000}{53.41\%} = ₹\ 6{,}90{,}882$$

(ब) पिछले वर्ष कमाया गया लाभ

= (बिक्री – कुल परिवर्तनशील लागत) – कुल स्थायी लगात

= (₹ 9,25,000 – ₹ 4,31,000) – ₹ 3,69,000 = ₹ 1,25,000

(स) सुरक्षा सीमा (%)

$$= \frac{\text{बिक्री} - \text{सम–विच्छेद विक्रय}}{\text{विक्रय}} \times 100$$

$$= \frac{₹\ 9{,}25{,}000 - ₹\ 6{,}90{,}882}{₹\ 9{,}25{,}000} \times 100 = 25.31\%$$

(द) लाभ, यदि बिक्री वास्तविक बिक्री से 10 प्रतिशत कम थी

लाभ = 90% (₹ 9,25,000 – ₹ 4,31,000) – ₹ 3,69,000

= ₹ 4,44,600 – ₹ 3,69,000 = ₹ 75,600

9. (अ) विपणन प्रयासों से पहले लोचदार बजट

	उत्पाद अ 6,000 इकाइयाँ		उत्पाद ब 9,000 इकाइयाँ	
	प्रति इकाई	कुल (₹)	प्रति इकाई	कुल (₹)
बिक्री	120.00	7,20,000	78.00	7,02,000
कच्ची सामग्री लागत	60.00	3,60,000	42.00	3,78,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

प्रत्यक्ष श्रम लागत प्रति इकाई	30.00	1,80,000	18.00	1,62,000
परिवर्तनशील उपरिव्यय प्रति इकाई	12.00	72,000	6.00	54,000
स्थायी उपरिव्यय प्रति इकाई	8.00	48,000	4.00	36,000
कुल लागत	110.00	6,60,000	70.00	6,30,000
लाभ	10.00	60,000	8.00	72,000

(ब) विपणन प्रयासों के बाद लोचदार बजट

	उत्पाद अ (₹) 7,500 इकाइयाँ		उत्पाद ब (₹) 9,500 इकाइयाँ	
	प्रति इकाई	कुल	प्रति इकाई	कुल
बिक्री	120.00	9,00,000	78.00	7,41,000
कच्ची सामग्री लागत	60.00	4,50,000	42.00	3,99,000
प्रत्यक्ष श्रम लागत प्रति इकाई	30.00	2,25,000	18.00	1,71,000
परिवर्तनशील उपरिव्यय प्रति इकाई	13.20	99,000	6.60	62,700
स्थायी उपरिव्यय प्रति इकाई	6.72	50,400	3.98	37,800
कुल लागत	109.92	8,24,400	70.58	6,70,500
लाभ	10.08	75,600	7.42	70,500

10. (अ) गुड़ चीनी का एक उपोत्पाद है (गौण उत्पाद) और लागत लेखांकन मे उपोत्पाद का निम्न प्रकार से व्यवहार किया जाता है :

(i) **जब इनका कुल मूल्य बहुत कम हो :** इनकी बिक्री से प्राप्त राशि का निम्नलिखित तरीके से निपटारा किया जा सकता है:

– उपोत्पाद के बिक्री मूल्य को लागत लाभ–हानि खाते में क्रेडिट किया जा सकता है और लागत लेखों में कोई क्रेडिट नहीं की जाती। लागत लाभ–हानि खाते की क्रेडिट को या तो विविध आय या अतिरिक्त बिक्री राजस्व की तरह व्यवहार किया जाता है।

– उपोत्पाद बिक्री से प्राप्त राशि को कुल लागत में से घटाने का व्यवहार किया जाता है। बिक्री प्राप्ति को या तो उत्पादन लागत में से या बिक्री की लागत में से घटाया जाना चाहिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **जब इनकी आगे प्रक्रियांकन की आवश्यकता हो :** इस मामले में, विभाजन बिन्दु पर उपोत्पाद के शुद्ध वसूली मूल्य की प्राप्ति, उपोत्पाद के वसूली मूल्य में से आगे प्रक्रियांकन लागत घटाकर की जा सकती है। यदि मूल्य छोटा है तो उपरोक्त (i) में वर्णित अनुसार व्यवहार किया जा सकता है।

(ब) समूह लेखाविधि में आर्थिक समूह मात्रा

समूह लेखा विधि में सबसे महत्वपूर्ण समस्या आर्थिक समूह मात्रा निर्धारण करने की है। आर्थिक समूह मात्रा निर्धारण में दो प्रकार की लागतें (i) लगाने की लागतें और (ii) रखने की लागतें शामिल होती हैं। समूह के आकार में वृद्धि के साथ, रखने की लागतों में वृद्धि होती है लेकिन उत्पाद को लगाने की लागतों में प्रति इकाई कमी होती है। यह स्थिति उलट जाती है, जब समूह का आकार कम होता है। अतः यह एक विशेष समूह का आकार होता है जिसमें लगाने की लागतें और रखने की लागतें दोनों न्यूनतम होती हैं। एक समूह के इस आकार को आर्थिक या अनुकूलतम समूह मात्रा के रूप में जाना जाता है।

आर्थिक समूह मात्रा का निर्धारण टेबल, ग्राफ या गणितीय सूत्र की सहायता से निर्धारण किया जा सकता है। इसके निर्धारण हेतु इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्यतः गणितीय सूत्र निम्न है :

आर्थिक समूह मात्रा (E.B.Q.) = $\sqrt{\frac{2DS}{C}}$

जहां, डी (D) = उत्पाद के लिए वार्षिक मांग

एस (S) = प्रति समूह लगाने की लागत

सी (C) = उत्पादन की प्रतिवर्ष इकाई रखने की लागत।

(स) अवशेष को कुछ विशेष प्रकार के निर्माण के दौरान उत्पन्न शेष के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, सामान्यतः जिसकी राशि कम होती है और जिसे बिना आगे प्रक्रियांकन के वसूल किया जा सकता है।

अवशेष का व्यवहार लागत लेखांकन में निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

(i) **जब अवशेष का मूल्य नगण्य हो :** इसे लागतों में सम्मिलित नहीं किया जाता। अन्य शब्दों में, अवशेष की लागत को अच्छी इकाइयों द्वारा वहन किया जाता है और अवशेष की आय को अन्य आय माना जाता है।

(ii) **जब अवशेष किसी विशिष्ट उपकार्य या प्रक्रिया से संबंधित न हो :** अवशेष के विक्रय मूल्य में से विक्रय एवं वितरण लागत घटाने के पश्चात् शेष बची राशि को उपरिव्ययों की दर को कम करने के लिए उपरिव्ययों में से घटाया जाता है। इस विधि के बदले हुए रूप में शुद्ध वसूली मूल्य को सामग्री लागत में से भी घटाया जा सकता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iii) **जब अवशेष किसी विशेष प्रक्रिया उपकार्य से संबंधित हो और इसका मूल्य महत्वपूर्ण हो :** अवशेष खाते में पूरी लागत दिखानी चाहिए। संबंधित उपकार्य या प्रक्रिया को जमा किया जाना चाहिए। अवशेष खाते का लाभ–हानि वसूली पर लागत लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया जाएगा।

(द) लागत योग ठेके : लागत योग ठेके के तहत, कुल लागत में लाभ का एक प्रतिशत जोड़कर ठेका मूल्य का निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार के ठेके तभी किये जाते हैं जब सामग्री, श्रम व सेवाओं आदि की अस्थिर स्थिति के कारण ठेका लागत का अनुमान उचित शुद्धता से लगाना संभव नहीं हो।

लागत योग ठेके से निम्नलिखित लाभ हैं :

(i) ठेकेदार को लाभ का एक निश्चित प्रतिशत का आश्वासन दिया जाता है। ठेके पर किसी भी प्रकार हानि होने की कोई जोखिम नहीं होती है।

(ii) यह विशेष रूप से तभी उपयोगी है जब अनुमान लगाते समय किया जाने वाला कार्य निश्चित रूप से तय नहीं हो।

(iii) ठेकेदाता को 'ठेके की लागत' के प्रति खुद आश्वस्त करने एवं ठेके की लागत की सच्चाई जानने के लिए जब चाहे ठेकेदार की पुस्तकों एवं दस्तावेजों की जाँच करने का अधिकार है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

M:\CA_2015\RTP May 2015\IPPC Gr-I\Paper-3(b) CA&FM\Ist\Lekhraj\1-4-2015
M:\CA_2015\RTP May 2015\IPPC Gr-I\Paper-3(b) CA&FM\IInd\Lekhraj\6-4-2015
M:\CA_2015\RTP May 2015\IPPC Gr-I\Paper-3(b) CA&FM\IIIrd\Gopal Singh\6-4-2015

भाग II : वित्तीय प्रबंधन

प्रश्न

1. **नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर कारण सहित/टिप्पणी सहित दीजिए :**

(अ) एल्फा लिमिटेड ने ₹ 1,000 का उधार लिया जो अगले तीन वर्षो में प्रत्येक वर्ष के अंत में समान किस्तों में चुकाया जाना है। ब्याज दर 15 प्रतिशत है। आपसे, अल्फा लिमिटेड की परिशोधन अनुसूची तैयार करना अपेक्षित है।

(ब) बीटा लिमिटेड निर्माण का कार्य करती है। अगले वर्ष के दौरान एक निश्चित उत्पाद की 50,000 इकाइयों का उपयोग होने की संभावना है। एक आदेश के प्रकियांकन की लागत ₹ 20 और रखरखाव की लागत एक वर्ष के लिए ₹ 0.50 प्रति इकाई है। एक आदेश पर प्रतीक्षा अवधि 5 दिनों की है और कंपनी दो दिनों के उपयोग की आपूर्ति का संचय रखेगी।

आपसे गणना अपेक्षित है :

(i) आर्थिक आदेश मात्रा और

(ii) पुनः आदेश बिन्दु (वर्ष में 360 दिन मानना है)

(स) यदि कम्पनी को यह पता चलता है कि उसकी पूंजी लागत में परिवर्तन हुआ है तो क्या यह कम्पनी की लाभदायकता को प्रभावित करती है?

(द) क्या देनदारों को शीघ्र भुगतान हेतु प्रोत्साहित करने के लिए छूट देना सही है?

(इ) कंपनियों को अपनी कार्यशील पूंजी के स्तरों पर नियंत्रण करने के तरीकों पर सुझाव दीजिए।

कार्यशील पूंजी प्रबंधन

2. गामा लिमिटेड उत्पादन की लागत में मूल्य ह्रास को शामिल करते हुए बिक्री पर 20 प्रतिशत सकल लाभ की एक समान दर पर माल बेचता है। इसके वार्षिक आंकड़े इस प्रकार हैं :

	(₹)
बिक्री (2 माह के उधार पर)	24,00,000
सामग्री उपभोग (आपूर्तिकर्ताओं द्वारा दी गयी छूट 2 माह)	6,00,000
मजदूरी चुकायी (मासिक, अगले माह के प्रारम्भ में)	4,80,000
निर्माणी व्यय (नकद व्यय चुकाये–एक माह के बकाया में)	6,00,000
प्रशासनिक व्यय (नकद व्यय चुकाये–एक माह के बकाया में)	1,50,000
विक्रय संवर्धन व्यय (त्रैमासिक अग्रिम भुगतान)	75,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

गामा लिमिटेड एक महीने की कच्ची सामग्री और तैयार माल स्टॉक में रखती है। एक न्यूनतम नकद शेष 80,000 रू हमेशा रखती है। कम्पनी कार्यशील पूंजी रखरखाव के लिए 10 प्रतिशत सुरक्षा उपांत रखना चाहती है। कम्पनी के पास कोई कार्य प्रगति में नहीं है।

गामा लिमिटेड की नकदी लागत के आधार पर कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं का पता कीजिये।

विनियोग निर्णय

3. महालक्ष्मी लिमिटेड को दो मशीनों एम1 और एम2 के बीच चयन करने की आवश्यकता है। दोनों मशीनों का डिजाइन भिन्न है लेकिन समान क्षमता है और एकदम एक जैसा कार्य करती हैं। मशीन एम1 की लागत ₹ 1,50,000 और 3 वर्ष तक चलेगी। इसको चलाने की लागत ₹ 40,000 प्रति वर्ष है। मशीन एम2 एक आर्थिक रूप से सस्ता मॉडल है जिसकी लागत केवल ₹ 1,00,000 है, लेकिन 2 वर्ष तक चलेगी और चलाने की लागत ₹ 60,000 प्रति वर्ष है। ये वास्तविक नकद प्रवाह हैं। लागतों का पूर्वानुमान ₹ की स्थिर क्रय शक्ति पर किया गया है। कर पर ध्यान न दें। पूंजी की अवसर लागत 10 प्रतिशत है। महालक्ष्मी लिमिटेड को कौन सी मशीन क्रय की जानी चाहिये?

वित्तीय निर्णय

4. सोहना लिमिटेड की बिक्री, परिवर्तनशील लागत और स्थिर लागत क्रमशः ₹ 75,00,000, ₹ 42,00,000 और ₹ 60,00,000 है। कम्पनी ने ₹ 45,00,000 9 प्रतिशत पर उधार लिये और इसकी कुल इक्विटी पूंजी ₹ 55,00,000 है।

   (अ) सोहना लिमिटेड का विनियोग पर प्रत्याय (ROI) क्या है?

   (ब) क्या यह अनुकूल वित्तीय उत्तोलक रखती है?

   (स) यदि सोहना लिमिटेड ऐसे उद्योग से संबंध रखती जिसका सम्पत्ति आवर्त 3 है, क्या यह उच्च अथवा निम्न उत्तोलक रखती है?

   (द) सोहन लिमिटेड का परिचालन, वित्तीय और संयुक्त उत्तोलक क्या हैं?

   (इ) यदि बिक्री ₹ 50,00,000 तक गिर जाती है तो नया इबीआईटी (EBIT) क्या होगा?

वित्तीय निर्णय

5. मेटा लिमिटेड अपनी निवेश योजनाओं को पूरा करने के लिए ₹ 10 लाख का अतिरिक्त वित्त जुटाना चाहती है। इसके पास निवेश उद्देश्यों के लिए ₹ 2,10,000 प्रतिधारित अर्जनों के रूप में उपलब्ध हैं। अन्य जानकारी निम्नलिखित है :

(1)	ऋण / इक्विटी मिश्रण	30% / 70%
(2)	ऋण की लागत	
	₹ 1,80,000 तक	10% (कर से पूर्व)
	₹ 1,80,000 से अधिक पर	16% (कर से पूर्व)
(3)	प्रति अंश आय	₹ 4

© The Institute of Chartered Accountants of India

(4)	लाभांश का भुगतान	अर्जनों का 50%
(5)	लाभांश की अपेक्षित वृद्धि दर	10%
(6)	प्रति अंश का वर्तमान बाजार मूल्य	₹ 44
(7)	कर की दर	50%

आपसे अपेक्षित है :

(अ) अतिरिक्त वित्त जुटाने का तरीका निर्धारित करना।

(ब) अतिरिक्त ऋण पर कर के पश्चात औसत लागत का निर्धारण करना।

(स) प्रतिधारित अर्जनों और इक्विटी की लागत का निर्धारण करना।

(द) अतिरिक्त वित्त पर कर के पश्चात कुल औसत भारित लागत की गणना करना।

वित्तीय विश्लेषण और योजना

6. निम्नलिखित सूचनाओं से 31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लूना लिमिटेड का प्रत्यक्ष विधि द्वारा नकद प्रवाह विवरण तैयार करने की आपसे अपेक्षा है:

(अ) वर्ष के लिए बिक्री की राशि ₹ 135 करोड़ जिसमें से 60 प्रतिशत नकद बिक्री थी।

(ब) वर्ष के लिए क्रय की राशि ₹ 55 करोड़ जिसमें से 80 प्रतिशत उधार क्रय था।

(स) प्रशासनिक और बिक्री व्यय की राशि ₹ 18 करोड़ और वेतन भुगतान की राशि ₹ 22 करोड़ चुकाए।

(द) लूना लिमिटेड ने ₹ 20 करोड़ के ऋणपत्रों का शोधन 10 प्रतिशत प्रीमियम पर किया। ऋणपत्र धारकों को शोधन के बदले ₹ 15 करोड़ के समता अंशो का निर्गमन तथा शेष राशि का नकद भुगतान किया गया था। वर्ष के दौरान ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान ₹ 1.50 करोड़ का किया गया था।

(इ) वर्ष के दौरान लाभांश का भुगतान ₹ 10 करोड़ का किया गया। लाभांश वितरण कर की दर 17 प्रतिशत का भी भुगतान किया गया था।

(एफ) ₹ 12 करोड़ लागत के निवेशों को ₹ 2.4 करोड़ के लाभ पर बेचा गया था।

(जी) वर्ष के दौरान ₹ 8 करोड़ का आयकर चुकाया गया था।

(एच) एक पुराने संयंत्र के हिस्से के बदले ₹ 21 करोड़ की लागत से एक नया संयंत्र क्रय किया गया था। पुराने संयंत्र का पुस्तक मूल्य ₹ 12 करोड़ था लेकिन विक्रेता ने केवल ₹ 10 करोड़ के मूल्य में पुराने संयंत्र को लिया। शेष राशि का विक्रेता को नकद में भुगतान किया गया था।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(आई) आपके विचार के लिए निम्न शेष भी उपलब्ध कराये गये हैं :

	1.4.2013	31.03.2014
देनदार	45	50
लेनदार	21	23
बैंक	6	–

विनियोग निर्णय

7. ईलाइट लिमिटेड तीन परियोजनाओं अ, ब और स पर विचार कर रहा है। इन परियोजनाओं से जुड़े नकद प्रवाह नीचे दिये गये हैं :

तीन परियोजनाओं से जुड़े नकद प्रवाह (₹)					
परियोजना	C_0	C_1	C_2	C_3	C_4
अ	(5,000)	1,000	1,000	3,000	0
ब	(1,000)	0	1,000	2,000	3,000
स	(5,000)	1,000	1,000	3,000	5,000

आपस अपेक्षित है :

(अ) तीनो परियोजनाओं में प्रत्येक की पुनर्भुगतान अवधि की गणना कीजिए।

(ब) यदि कट–ऑफ अवधि 2 वर्ष है, तब कौनसी परियोजना स्वीकार्य होनी चाहिये?

(स) यदि पूंजी की अवसर लागत 10 प्रतिशत है तो धनात्मक शुद्ध वर्तमान मूल्यों (NPVs) वाली परियोजनाएँ बताइये।

(द) ''कट–ऑफ अवधि के बाद प्राप्त नकद प्रवाह को अदायगी विधि (paybak period) में बहुत अधिक वजन /महत्व दिया जाता है।'' क्या यह सत्य है या असत्य ?

(इ) ''यदि एक फर्म में सभी परियोजनाओं के लिए एक ही कट–ऑफ अवधि का इस्तेमाल किया है, यह कई अल्पकालीन परियोजनाओं को स्वीकार करने के समान है।'' क्या यह सत्य है या असत्य ?

वित्तीय विश्लेषण और योजना

8. श्री लिमिटेड ने 31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष से संबंधित निम्नलिखित अनुपातों और सूचनाओं को प्रस्तुत किया है :

बिक्री (₹)	60,00,000
शुद्ध कीमत (Net worth) पर प्रत्याय	25%
आयकर की दर	50%
अंश पूंजी का संचय	7 : 3
चालू अनुपात	2
बिक्री पर शुद्ध लाभ	6.25%

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्टॉक आवर्त्त (बेचे गये माल की लागत पर आधारित)	12
बेचे गये माल की लागत (₹)	18,00,000
ऋणपत्रों पर ब्याज (₹)	60,000
विविध देनदार (₹)	2,00,000
विविध लेनदार (₹)	2,00,000

आपसे अपेक्षा की जाती है :

(अ) 31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के परिचालन व्ययों की गणना कीजिए।

(ब) 31 मार्च को निम्न प्रारूप में चिट्ठा तैयार कीजिए।

31 मार्च, 2014 को चिट्ठे का प्रारूप

दायित्व	(₹)	सम्पतियाँ	(₹)
अंश पूंजी		स्थायी सम्पतियाँ	
संचय और आधिक्य		चालू सम्पतियाँ :	
15% ऋणपत्र		स्टॉक	
विविध लेनदार		देनदार	
		नकद	

कार्यशील पूंजी का प्रबंधन

9. नोह लिमिटेड का निम्नलिखित वित्तीय विवरण पत्र है :

नोह लिमिटेड

चिट्ठा

	31 मार्च, 2014 (₹)	**31 मार्च, 2013** (₹)
सम्पत्तियाँ		
नकद	3,49,600	4,83,600
व्यापारिक विनियोग	1,60,000	4,20,000
देनदार	3,05,400	3,08,000
स्टॉक	2,35,200	1,84,600
पूर्वदत्त व्यय	7,600	9,200
ए लिमिटेड में विनियोग	3,00,000	–
भूमि	14,400	14,400
भवन (ह्रास के बाद शुद्ध)	24,07,200	7,13,600
मशीनरी (ह्रास के बाद शुद्ध)	4,43,400	4,28,200
कुल सम्पत्तियाँ	42,22,800	25,62,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

दायित्व		
लेनदार	1,15,200	1,08,400
बैंक अधिविकर्ष	30,000	25,000
उपार्जित व्यय	17,400	18,400
आयकर देय	1,93,000	67,400
दीर्घकालीन ऋणों पर चालू किस्त देय	40,000	–
दीर्घकालीन ऋण	1,60,000	2,00,000
ऋणपत्र (छूट घटाने के बाद)	9,60,000	–
अंश पूंजी, 10 ₹ मूल्य	6,70,000	6,00,000
अंश प्रीमियम	13,40,000	9,50,000
संचय एवं आधिक्य	6,97,200	4,93,000
कुल दायित्व	42,22,800	25,62,200

नोह लिमिटेड
आय विवरण
31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिये

	(₹)
बिक्री	16,92,400
बेचे गये माल की लागत और परिचालन व्यय जिसमें भवन का ह्रास ₹ 26,400 और मशीनरी का ह्रास ₹ 45,600 शामिल है।	11,91,200
परिचालन लाभ	5,01,200
व्यापारिक विनियोगों के विक्रय पर लाभ	25,600
मशीनरी के विक्रय पर लाभ	7,400
कर से पूर्व लाभ	5,34,200
आयकर	2,09,400
शुद्ध लाभ	3,24,800

अतिरिक्त सूचनाएँ :

(i) वर्ष के दौरान ₹ 36,600 शुद्ध पुस्तक मूल्य की मशीनरी को बेच दिया गया था।

(ii) ए लिमिटेड के अंशों को ₹ 1,20,000 नकद और नोह लिमिटेड के 3000 अंशों का निर्गमन करके हासिल किया गया था। उस समय नोह लिमिटेड के अंश ₹ 60 प्रति अंश पर बेचे गये थे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iii) एक नये भवन को ₹ 17,20,000 की लागत पर क्रय किया गया था।

(iv) जनवरी, 2014 को ₹ 100 अंकित मूल्य वाले ऋणपत्र ₹ 96 पर निर्गमित किये गये थे।

(v) बेचे गये विनियोगों की लागत ₹ 2,60,000 थी।

(vi) कम्पनी ने 4,000 अंशों को ₹ 2,80,000 में निर्गमन किया।

(vii) 67,000 अदत्त अंशों पर नकद लाभांश ₹ 1.80 प्रति अंश दिया गया था।

आपसे 31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण पत्र कार्यशील पूंजी के आधार पर एवं समान रूप से नकद आधार पर तैयार करना अपेक्षित है।

10. निम्नलिखित का उत्तर दीजिये :

(अ) ''विनियोग, पोषण और लाभांश निर्णयों के बीच अंतर संबंध पर'' एक लघु टिप्पणी लिखिए।

(ब) व्यावसायिक जोखिम और वित्तीय जोखिम के बीच अन्तर कीजिए।

(स) मुद्रा स्फीति बॉण्ड और फ्लोटिंग दर बॉण्ड में अन्तर कीजिए।

सुझावित उत्तर/संकेत

1. (अ) **परिशोधन अनुसूची तैयार करना**

समान किस्तों की राशि (A) = $\frac{P_n}{PVIFA_{i.n}} = \frac{1,000}{2.2832}$ = ₹ 437.98

परिशोधन अनुसूची

वर्ष	भुगतान	ब्याज	मूलधन का पुनर्भुगतान	बकाया शेष
	₹	₹	₹	₹
1	437.98	150.00	287.98	712.02
2	437.98	106.80	331.18	380.84
3	437.98	57.13	380.85	

*वर्ष के प्रारम्भ में ऋण की शेष राशि × ब्याज दर,

जैसे, 1 वर्ष = ₹ 1,000 × 0.15) = ₹ 150

(ब) **(i) आर्थिक आदेश मात्रा की गणना** (EOQ)

आर्थिक आदेश मात्रा (EOQ) = $\sqrt{\frac{2OA}{C}}$

© The Institute of Chartered Accountants of India

$$= \sqrt{\frac{2 \times 50,000 \times 20}{0.50}}$$

$$= \sqrt{40,00,000} = 2,000 \text{ इकाइयाँ}$$

(ii) पुनः आदेश बिन्दु की गणना (EOQ)

उपयोग प्रतिदिन = 50,000 ÷ 360 = 139 इकाइयाँ

पुनः आदेश बिन्दु = सुरक्षा स्टॉक + समय सीमा × उपयोग

= 2(139) + 5 (139) = 278 + 695 = 793

(स) उत्तर इस पर निर्भर करता है कि कम्पनी ने वित्त पोषण किस प्रकार किया है :

यदि कंपनी मुख्य रूप से अल्पकालीन स्रोतों से वित्त पोषण करती है तो ब्याज दरों में वृद्धि को अनदेखा नहीं कर सकती, और लम्बी अवधि के पोषण का चुनाव (Switch) कर सकती है। यह उच्च दर पर किया जायेगा और लाभदायकता में कमी हो जायेगी।

यदि कम्पनी मुख्य रूप से वित्त पोषण दीर्घकालीन स्रोतों से करती है, तो ब्याज दरों में वृद्धि इसके लाभों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं करेगी। हालांकि, उच्च ब्याज दर से आर्थिक क्रिया में कमी आती है तथा उसके अनुसार लाभों में गिरावट आ सकती है।

यदि कम्पनी मुख्य रूप से प्रतिधारित अर्जनों या समता अंशों से वित्त पोषण करती है तो शेयरधारकों की अपेक्षित प्रत्याय में वृद्धि से उच्च लाभांश के लिए दबाव को बढ़ावा मिलेगा। कम्पनी के पास इस तरह की मांग को पूरा करने के लिए अपर्याप्त धन हो सकता है।

(द) साख नीति में प्रस्तावित परिवर्तन अतिरिक्त लागतों और लाभों के परिणामों को ध्यान में रखकर मूल्यांकित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, नकद छूट की शुरुआत से होने वाली लागत की तुलना खातों के तेजी से निफ्टाने से होने वाले लाभ से संबधित ब्याज की राशि की कमी से और परिणामस्वरूप अतिरिक्त व्यवसाय से की जा सकती है। नयी नीति से उत्पन्न होने वाले सीमांत लाभ जब सीमांत लागतों से ज्यादा हों तभी परिवर्तन किये जाने चाहिये।

(इ) कंपनियाँ अपनी कार्यशील पूंजी के स्तर पर नियंत्रण हेतु संबंधित स्टॉक, देनदारों, नकद एवं लेनदारों के विषय में नीतियों को बनाना तथा उनको लागू करने का प्रयोग कर सकती हैं। इन नीतियों में कार्यशील पूंजी को प्रभावित करने वाले निम्न घटकों के प्रभावों को ध्यान में रखा जायेगा। ये इस प्रकार हैं :

- **देनदार** : कम्पनी तथा इसके प्रतिस्पर्धियों द्वारा दी गयी साख अवधि, बीजक/ चालान की गति और प्रशासनिक कुशलता के अन्य पहलु, पहले निपटारे के लिए छूट का प्रयोग, देनदारों से संग्रहण के तरीके, बिक्री की मात्रा का पुर्वानुमान।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- **स्टॉक** : उत्पादन प्रक्रिया की अवधि, कच्ची सामग्री की आवर्त दर, तैयार माल की आवर्त दर, वितरण समय अवधि, उत्पादन एवं बिक्री की बजटेड एवं वास्तविक मात्रा।
- **लेनदार** : आपूर्तिकर्ताओं को कम्पनी द्वारा भुगतान में की जाने वाली देरी की सीमा, क्रय की मात्रा, शीघ्र भुगतान पर नकद छूट।
- **नकद** : ब्याज दरें एवं उपलब्ध अल्पकालीन निवेश, साख की उपलब्धता जिसमें कम्पनी आसानी से वित्त जुटा सकती है।

2. कार्यशील टिप्पणियाँ :

1.	**निर्माणी व्यय**		**₹**
	बिक्री		24,00,000
	घटाइये : सकल लाभ उपांत – 20%		4,80,000
	कुल निर्माणी लागत		19,20,000
	घटाइये : सामग्री उपभोग	6,00,000	
	मजदूरी	4,80,000	10,80,000
	निर्माणी व्यय		8,40,000
	घटाइये : नकद निर्माणी व्यय (50,000 × 12)		6,00,000
	ह्रास		2,40,000
2.	**कुल नकद लागतें**		**₹**
	निर्माणी लागतें		19,20,000
	घटाइये : ह्रास		2,40,000
	नकद निर्माणी लागतें		16,80,000
	जोड़िए : प्रशासनिक व्यय		1,50,000
	विक्रय संवर्धन व्यय		75,000
	कुल नकद लागतें		19,05,000

कम्पनी की कार्यशील पूंजी की आवश्यकताएं दर्शाता हुआ विवरण

		₹
चालू सम्पत्तियाँ		
देनदार कुल नकद लागतों का 1/6 (1/6 × 19,05,000)		3,17,500
(कार्यशील टिप्पणी 2 देखें)		
बिक्री संवर्धन व्यय (पूर्वदत्त)		18,750

© The Institute of Chartered Accountants of India

कच्चे माल का स्टॉक (1 माह)		50,000
तैयार माल (नकद निर्माणी लागतों का 1/12)		1,40,000
(₹ 16,80,000 × 1/12)		
(कार्यशील टिप्पणी 2 देखें)		
हस्तस्थ रोकड़		80,000
		6,06,250
घटाइये : चालू दायित्व		
माल के लिए लेनदार (2 माह)	1,00,000	
मजदूरी (1 माह)	40,000	
निर्माणी व्यय (1 माह)	50,000	
प्रशासनिक व्यय (1 माह)	12,500	2,02,500
शुद्ध कार्यशील पूंजी		4,03,750
जोड़िये : सुरक्षा सीमा 10% की दर से		40,375
कार्यशील पूंजी की आवश्यकता		4,44,125

3. दो मशीनों का मूल्याकंन दर्शाता हुआ विवरण पत्र

मशीनें	एम 1	एम 2
क्रय लागत (₹) : (i)	1,50,000	1,00,000
मशीनों का जीवन काल (वर्षों में)	3	2
मशीन चलाने की लागत प्रति वर्ष (₹) (ii)	40,000	60,000
10% की दर से संचयी वर्तमान मूल्य कारक 1–3 वर्षों का : (iii)	2.486	–
10% की दर से संचयी वर्तमान मूल्य कारक 1–2 वर्षों का : (iv)	–	1.735
मशीनों को चलाने की वर्तमान मूल्य लागत (₹) (v)	99,440	1,04,100
	[(ii) × (iii)]	[(ii) × (iv)]
मशीनों का नकद बहिर्वाह (₹) : (vi) = (i) + (v)	2,49,440	2,04,100
वार्षिक नकद बहिर्वाह का समतुल्य वर्तमान मूल्य	1,00,338	1,17,637
	[(vi) ÷ (iii)]	[(vi) ÷ (iv)]

सलाह : महालक्ष्मी लिमिटेड को मशीन एम1 क्रय करनी चाहिए, क्योंकि इसका समतुल्य नकद बहिर्वाह मशीन एम2 से कम है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. (अ) सोहना लिमिटेड के निवेश पर प्रतिदाय (ROI) की गणना

$$\text{ROI} = \frac{\text{EBIT}}{\text{Investment}} \qquad \text{आर ओ आई} = \frac{\text{इबीआईटी}}{\text{निवेश}}$$

इबीआईटी = बिक्री – परिवर्तनशील लागत – स्थिर लागत

= ₹ 75 लाख – ₹ 42 लाख – ₹ 6 लाख = ₹ 27 लाख

$$\text{ROI} = \frac{₹\ 75\ \text{लाख}}{₹\ 100\ \text{लाख}} \times 100 = 27\ \text{प्रतिशत}$$

(ब) हाँ, सोहना लिमिटेड का वित्तीय उत्तोलक अनुकूल है, जैसाकि इसका आरओआई (ROI) ऋण पर ब्याज की तुलना में अधिक है।

(स) सोहना लिमिटेड का सम्पत्ति आवर्त अनुपात की गणना

$$\text{सम्पत्ति आवर्त अनुपात} = \frac{\text{बिक्री}}{\text{कुल सम्पतियां या कुल विनियोग}}$$

$$= \frac{₹\ 75\ \text{लाख}}{₹\ 100\ \text{लाख}} = 0.75$$

सोहना लिमिटेड का सम्पत्ति आवर्त उद्योग के औसत अनुपात 3 से कम है।

(द) उत्तोलक की गणना

$$\text{परिचालन उत्तोलक} = \frac{\text{अंशदान}}{\text{इबीआईटी}} = \frac{₹\ 75\ \text{लाख} - ₹\ 42\ \text{लाख}}{₹\ 27\ \text{लाख}} = 1.22$$

$$\text{वित्तीय उत्तोलक} = \frac{\text{इबीआईटी}}{\text{इबीआईटी} - \text{ब्याज}} = \frac{₹\ 27\ \text{लाख}}{₹\ 27\ \text{लाख} - ₹\ 4.05\ \text{लाख}} = 1.18$$

$$\text{परिचालन उत्तोलक} = \frac{\text{बिक्री} - \text{परिवर्तनशील लागत}}{\text{ईबीआईटी} - \text{ब्याज}} = \frac{₹\ 33\ \text{लाख}}{₹\ 22{,}95{,}000} = 1.44$$

(इ) ₹ 50 लाख की बिक्री पर इबीआईटी (EBIT)

		(₹)
विक्रय से आय		50,00,000
घटाइये : परिवर्तनशील लागत (50 लाख × 0.56)		
घटाइये : स्थिर लागत	28,00,000	34,00,000
	6,00,000	
इबीआईटी (EBIT)		16,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

5. **(अ) अतिरिक्त वित्त जुटाने का तरीका**

समता	10,00,000 ₹ का 70%	= ₹ 7,00,000
ऋण	10,00,000 ₹ का 30%	= ₹ 3,00,000

अतिरिक्त वित्त जुटाने के बाद पूंजी संरचना

			(₹)
अंशधारियों का कोष			
समता पूंजी	(7,00,000 – 2,10,000)		4,90,000
प्रतिधारित अर्जनें			2,10,000
ऋण (ब्याज दर 10% वार्षिक)			1,80,000
ऋण (ब्याज दर 16% वार्षिक)	(3,00,000 – 1,80,000)		1,20,000
		कुल कोष	10,00,000

(ब) अतिरिक्त ऋण के पश्चात् औसत लागत का निर्धारण

$K_D = I (1 – T)$

₹ 1,80,000 = 10% (1 – 0.5) = 5% या 0.05

₹ 1,20,000 = 16% (1 – 0.5) = 8% या 0.08

ऋण की औसत लागत

$$= \frac{(1,80,000 \times 0.5) + (1,20,000 \times 0.8)}{3,80,000} \times 100 = \frac{18,600}{3,00,000} = 6.2\%$$

(स) लाभांश वृद्धि मॉडल लागू करते हुए प्रतिधारित अर्जनों एवं इक्विटी लागतों का निर्धारण

$$K_E = \frac{D_1}{p_0} + g$$

यहां पर

K_E = इक्विटी लागत (cost of equity)

D_1 = लाभांश (1 + वृद्धि दर) (D_0 (1 + g))

D_0 = लाभांश पेआऊट (जो अर्जनों का 50% = 50% × ₹ 4 = ₹ 2)

g = वृद्धि दर (Growth rate)

© The Institute of Chartered Accountants of India

P_0 = प्रति अंश चालू बाजार मूल्य

अतः $K_E = \frac{2(1.1)}{44} + 10\%$

$= \frac{2.2}{44} + 10\% = 5\% + 10\% = 15\%$

$K_r = K_E = 15$ प्रतिशत

(द) अतिरिक्त वित्त पर कर के पश्चात् कुल भारित औसत लागत की संगणना

विवरण	₹	भार	कोषों की लागत
इक्विटी (प्रतिधारित अर्जनों सहित)	7,00,000	0.70	15%
ऋण	3,00,000	0.30	6.2%

भारित लागत = (इक्विटी लागत × % इक्विटी) + (ऋण लागत × % ऋण)

= (15% × 0.70) + (6.2% × 0.30)

= 10.5% + 1.86 % = 12.36%

6. लूना लिमिटेड

31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष का नकद प्रवाह विवरण पत्र

(प्रत्यक्ष विधि का प्रयोग करते हुए)

विवरण	₹ करोड़ में	₹ करोड़ में
परिचालन गतिविधियों से नकद प्रवाह		
नकद बिक्री (135 × 0.6)	81	
देनदारों से नकद प्राप्तियाँ [45 + (135 × 40%) – 50]	49	
नकद क्रय (55 का 20%)	(11)	
आपूर्तिकर्ताओं को नकद भुगतान (21 + (55 × 80%) – 23)	(42)	
कर्मचारियों को नकद चुकाया	(22)	
उपरिव्ययों का नकद भुगतान (प्रशासनिक एवं बिक्री)	(18)	
परिचालन से जनित नकद	37	
आयकर का भुगतान	(8)	
परिचालन गतिविधियों से जनित शुद्ध नकद प्रवाह		29

© The Institute of Chartered Accountants of India

विनियोग गतिविधियों से नकद प्रवाह		
विनियोग का विक्रय (12+2.40)	14.4	
स्थायी सम्पत्तियों के क्रय पर भुगतान	(11)	
विनियोग गतिविधियों से शुद्ध नकद प्रवाह		3.4
वित्तिय गतिविधियों से नकद प्रवाह		
ऋणपत्रों का शोधन (22–15)	(7)	
ब्याज चुकाया	(1.5)	
लाभांश चुकाया	(10.0)	
लाभांश वितरण कर (DDT) चुकाया	(1.7)	
वित्तीय गतिविधियों में शुद्ध नकद उपयोग		(20.2)
नकद में शुद्ध वृद्धि		12.2
अवधि के प्रारम्भ में नकद		6.0
अवधि के अंत में नकद		18.2

7. (अ) पुनःभुगतान अवधि की गणना

	परियोजना अ		परियोजना ब		परियोजना स	
वर्ष	**नकद प्रवाह**	**संचयी नकद प्रवाह**	**नकद प्रवाह**	**संचयी नकद प्रवाह**	**नकद प्रवाह**	**संचयी नकद प्रवाह**
1	1,000	1,000	0	0	1,000	1,000
2	1,000	2,000	1,000	1,000	1,000	2,000
3	3,000	5,000	2,000	3,000	3,000	5,000
4	0	5,000	3,000	6,000	5,000	10,000

जब परियोजनाओं में नकद प्रवाह समान नहीं होते तब पुनर्भुगतान अवधि की गणना हेतु संचयी नकद प्रवाह तब तक ज्ञात किये जाते हैं जब तक ये मूल विनियोग के बराबर नहीं हो जाते। इसको ध्यान में रखते हुए, परियोजना अ, ब और स के पुनर्भुगतान की अवधि निम्न है :

परियोजना अ की पुनर्भुगतान अवधि = 3 वर्ष

परियोजना ब की पुनर्भुगतान अवधि = 2 वर्ष और

परियोजना स की पुनर्भुगतान अवधि = 3 वर्ष

(ब) यदि कट–ऑफ अवधि 2 वर्ष है तब परियोजना ब स्वीकार्य होनी चाहिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(स) परियोजना अ, ब और स के शुद्ध वर्तमान मूल्य (NPVs) की गणना

वर्ष	बट्टा कारक दर **10%**	परियोजना अ		परियोजना ब		परियोजना स	
		नकद प्रवाह	नकद प्रवाह का वर्तमान मूल्य	नकद प्रवाह	नकद प्रवाह का वर्तमान मूल्य	नकद प्रवाह	नकद प्रवाह का वर्तमान मूल्य
0		(5,000)		(1,000)		(5,000)	
1	0.909	1,000	909	0	0	1,000	909
2	0.826	1,000	826	1,000	826	1,000	826
3	0.751	3,000	2,253	2,000	1,502	3,000	2,253
4	0.683	0	0	3,000	2,049	5,000	3,145
			3,988		4,377		7,403
शुद्ध वर्तमान मूल्य (NPV)			**(1,012)**		**3,377**		**2,403**

सलाह : परियोजना ब और स स्वीकार्य होनी चाहिये क्योंकि इनके शुद्ध वर्तमान मूल्य धनात्मक हैं (शुद्ध वर्तमान मूल्य ब = ₹ 3,377, स = ₹ 2,403)

(द) असत्य

(इ) सत्य

8. (अ) **31 मार्च, 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए परिचालन व्ययों की गणना**

शुद्ध लाभ (बिक्री का 6.25% की दर से)		3,75,000
जोड़िये : आयकर (50% की दर से)		3,75,000
कर से पूर्व लाभ (PBT)		7,50,000
जोड़िये : ऋणपत्रों पर ब्याज		60,000
कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ (PBIT)		8,10,000
बिक्री		60,00,000
घटाइये : विक्रय किये गये माल की लागत	18,00,000	
कर एवं ब्याज से पूर्व लाभ (PBIT)	8,10,000	26,10,000
परिचालन व्यय		33,90,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ब) 31 मार्च, 2014 को चिट्ठे का प्रारूप

	(₹)		(₹)
अंश पूंजी	10,50,000	स्थायी सम्पत्तियाँ	17,00,000
संचय एवं अधिक्य	4,50,000	चालू सम्पत्तियाँ :	
15% ऋणपत्र	4,00,000	स्टॉक	1,50,000
विविध लेनदार	2,00,000	देनदार	2,00,000
		नकद	50,000
	21,00,000		21,00,000

कार्यशील टिप्पणियां :

(i) **अंश पूंजी एवं संचय**

शुद्ध कीमत पर प्रत्याय 25% है। अतः कर के पश्चात् लाभ ₹ 3,75,000 शुद्ध कीमत के 25% के समान होना चाहिये।

$$\text{शुद्ध कीमत} \times \frac{25}{100} = ₹\ 3,75,000$$

$$\therefore \text{ शुद्ध कीमत} \times \frac{3,75,00 \times 100}{25} = ₹\ 15,00,000$$

अंश पूंजी एवं संचय का अनुपात = 7 : 3

$$\text{अंश पूंजी} = 15,00,000 \times \frac{7}{10} = ₹\ 10,50,000$$

$$\text{संचय} = 15,00,000 \times \frac{3}{10} = ₹\ 4,50,000$$

(ii) **ऋणपत्र**

ऋणपत्रों पर ब्याज दर 15% = ₹ 60,000

$$\therefore \quad \text{ऋणपत्र} = \frac{60,000 \times 100}{15} = ₹\ 4,00,000$$

(iii) **चालू सम्पत्तियाँ :**

चालू अनुपात = 2

विविध लेनदार = ₹ 2,00,000

∴ चालू सम्पत्तियाँ = 2 × चालू दायित्व

= 2 × 2,00,000 = ₹ 4,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iv) **स्थायी सम्पत्तियाँ**

	(₹)
दायित्व :	
अंश पूंजी	10,50,000
संचय	4,50,000
ऋणपत्र	4,00,000
विविध लेनदार	2,00,000
	21,00,000
घटाइये : चालू सम्पत्तियाँ	4,00,000
स्थायी सम्पत्तियाँ	17,00,000

(v) **चालू सम्पत्तियों की संरचना**

स्टॉक आवर्त्त = 12

$$\frac{\text{बेचे गये माल की लागत}}{\text{अंतिम स्टॉक}} = 12$$

अंतिम स्टॉक $= \frac{18,00,000}{12} =$ ₹ 1,50,000

संरचना	(₹)
स्टॉक	1,50,000
विविध देनदार	2,00,000
नकद (शेष राशि)	50,000
कुल चालू सम्पत्तियाँ	4,00,000

9. **नोह लिमिटेड**

वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण (कार्यशील पूंजी के आधार पर)

31, मार्च 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए

	(₹)
स्रोत :	
परिचालन से कार्यशील पूंजी :	
कर के पश्चात् शुद्ध आय	3,24,800
जोड़िये : ह्रास	72,000
	3,96,800
घटाइये : मशीनरी की बिक्री पर लाभ	7,400
	3,89,400

© The Institute of Chartered Accountants of India

मशीनरी की बिक्री (₹ 36,600 + 7,400)	44,000
ऋणपत्रों का निर्गमन	9,60,000
नकद के लिए जारी अंश पूंजी (अंश प्रीमियम सहित)	2,80,000
वित्तीय व्यवहार जो कार्यशील पूंजी को प्रभावित नहीं करते	
ए लिमिटेड में विनियोग के आंशिक भुगतान में जारी किये गये अंश	1,80,000
प्रयुक्त वित्तीय संसाधन	18,53,400
उपयोग	
भवन का क्रय	17,20,000
मशीनरी का क्रय	97,400
दीर्घकालीन ऋणों पर वर्तमान किस्त देय	40,000
नकद लाभांश भुगतान	1,20,600
ए लिमिटेड में विनियोग क्रय का नकद भुगतान	1,20,000
वित्तीय व्यवहार जो कार्यशील पूंजी को प्रभावित नहीं करते	
ए लिमिटेड में विनियोगों के क्रय के बदले 3,000 अंश प्रत्येक ₹ 60 पर जारी	1,80,000
प्रयुक्त वित्तीय संसाधन	22,78,000
कार्यशील पूंजी में शुद्ध कमी	4,24,600

मशीनरी खाता

विवरण	₹	विवरण	₹
प्रारम्भिक शेष (दिया गया)	4,28,200	मशीनरी विक्रय (दिया गया)	36,600
क्रय	97,400	ह्रास (दिया गया)	45,600
		अंतिम शेष (दिया गया)	4,43,400
	5,25,600		5,25,600

नोह लिमिटेड

वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण पत्र (नकद आधार पर)

31 मार्च, 2014 को समाप्त हुए वर्ष के लिए

	₹	₹
स्रोत :		
परिचालन से नकद :		
कर के पश्चात् शुद्ध आय	3,24,800	
जोड़िये : ह्रास	72,000	
देनदारों में कमी	3,200	
पूर्वदत्त व्ययों में कमी	1,600	

© The Institute of Chartered Accountants of India

लेनदारों में वृद्धि	6,800	
देय आय कर में वृद्धि	25,600	4,34,000
घटाइये : मशीनरी के विक्रय से लाभ	7,400	
स्टॉक में वृद्धि	50,600	
उपार्जित व्ययों में कमी	1,000	59,000
		3,75,000
व्यापारिक विनियोगों की बिक्री		2,60,000
बैंक ओवरड्राफ्ट में वृद्धि		5,000
मशीनरी की बिक्री		44,000
ऋणपत्रों का निर्गमन		9,60,000
अंशों का निर्गमन		2,80,000
वित्तीय लेनदेन जो नकद को प्रभावित नहीं करते		
ए लिमिटेड में विनियोगों के आंशिक भुगतान के लिए जारी अंश		1,80,000
दीर्घकालीन ऋणों पर वर्तमान में देय किस्त		40,000
प्रयुक्त वित्तीय संसाधन		21,44,000
उपयोग :		
भवन का क्रय		17,20,000
मशीनरी का क्रय		97,400
नकद लाभांश का भुगतान		1,20,600
ए लिमिटेड के विनियोगों का नकद में क्रय		1,20,000
वित्तीय लेनदेन जो नकद को प्रभावित नहीं करते		
ए लिमिटेड में विनियोगों के बदले 3,000 अंश प्रत्येक ₹ 60 पर जारी		1,80,000
दीर्घकालीन ऋणों पर वर्तमान में देय किस्त		40,000
प्रयुक्त वित्तीय संसाधन		22,78,000
नकद में शुद्ध कमी		1,34,000

टिप्पणियाँ :

(अ) परिचालन कोषों को करों पर शुद्ध दिखाया गया है। वैकल्पिक रूप से, करों का भुगतान कोषों के उपयोग के रूप में अलग से दिखाया जा सकता है। इस स्थिति में, करों को शुद्ध लाभ में जोड़ दिया जायेगा।

(ब) यदि लाभ–हानि खाते में दिखायी गयी कर की राशि को आयोजन मान लिया जाये तब करों के लिये चुकायी जाने वाली नकद राशि की गणना की जायेगी। वर्तमान

© The Institute of Chartered Accountants of India

समस्या में यदि यह प्रक्रिया अपनायी जाये, तो कर के भुगतान की नकद राशि ₹ 1,67,400 + 2,09,400 – 1,93,000 = ₹ 1,83,800 होगी।

(स) व्यापारिक विनियोगों की बिक्री पर लाभ को परिचालन आय माना गया है।

10. (अ) **विनियोग, वित्त पोषण और लाभांश निर्णयों के बीच अंतर संबंध** : वित्तीय कार्यों को तीन मुख्य निर्णयों में बांटा जा सकता है, अर्थात विनियोग, वित्त पोषण और लाभांश निर्णय। ये तीनों निर्णय अंतर संबंधित हैं, क्योंकि इन तीनों निर्णयों का अन्तर्निहित उद्देश्य एक समान है जो कि अंशधारकों की सम्पदा को अधिकतम करना है। जब तमाम निवेश, वित्त पोषण एवं लाभांश निर्णयों में अंतर संबंध है, तो इन निर्णयों का कम्पनी के अंशों के बाजार मूल्य पर संयुक्त प्रभाव का विचार करना चाहिये और इन निर्णयों को संयुक्त रूप से हल किया जाना चाहिये। एक नयी परियोजना में निवेश के निर्णय हेतु निवेश के लिये वित्त की आवश्यकता होती है। वित्तीय निर्णय, अंत्तः लाभांश निर्णय के प्रभाव से प्रभावित होते हैं क्योंकि प्रतिधारित अर्जनों का उपयोग आंतरिक वित्त पोषण में करने से अंशधारियों को उनके लाभांश से वंचित किया जाता है। एक कुशल वित्तीय प्रबंधन अनुकूलतम संयुक्त निर्णयों को सुनिश्चित कर सकते हैं। यह प्रत्येक निर्णय के मूल्यांकन द्वारा अंशधारियों की सम्पदा पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है।

उपरोक्त तीनों निर्णयों के अंतर–संबंधों के संदर्भ में संक्षेप में नीचे जांच कर रहे है और यह देखेंगे कि ये कैसे अंशधारियों की सम्पदा यानी कम्पनी के अंशों के बाजार मूल्यों को अधिकतम करने में सहायता प्रदान करते हैं।

विनियोग निर्णय : दीर्घकालीन कोषों का विभिन्न परियोजनाओं में निवेश का मूल्यांकन सावधानीपूर्वक पूंजी बजटिंग व अनिश्चित्ता विश्लेषण करके किया जाता है। हालांकि केवल उन्हीं विनियोग प्रस्तावों को स्वीकार किया जाता है जिनमें आशान्वित प्रतिफल कम से कम वित्त पोषण की लागतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो। यह कम्पनी की लाभदायकता को और अतः कम्पनी की सम्पदा को प्रभावित करता है।

वित्तीय निर्णय : कोषों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक कोष के स्रोतों से विभिन्न मुद्दे जुड़े होते हैं। वित्तीय प्रबंधक को दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन कोषों के बीच उचित संतुलन बनाये रखना होता है। दीर्घकालीन कोषों की कुल मात्रा में वह ऋण कोष एवं स्वामियों के कोषों के बीच उचित मिश्रण निश्चित करता है। अनुकूलतम वित्त पोषण मिश्रण इक्विटी अंशधारियों के प्रत्याय को बढ़ाएगा और अंतः सम्पदा को अधिकतम करेगा।

लाभांश निर्णय : वित्तीय प्रबंधन का लाभांश भुगतान एवं घोषणा से भी संबंध होता है। वह उच्च प्रंबधनों को यह निर्धारण करने में सहायता करता है कि लाभों का कितना भाग अंशधारियों को लाभांश के रूप में दिया जाना चाहिये और कितना भाग व्यवसाय में प्रतिधारण किया जाना चाहिये। एक अनुकूलतम लाभांश भुगतान अंशधारकों की सम्पदाओं को अधिकतम करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि विनियोग वित्त पोषण और लाभांश निर्णयों में अंतर–संबंध है और अंशधारियों की सम्पदा पर संयुक्त प्रभाव देखने के लिए संयुक्त रूप से निर्णय लिये जाते हैं।

(ब) व्यावसायिक जोखिम और वित्तीय जोखिम : फर्म के परिचालन से संबंधित जोखिम को व्यावसायिक जोखिम कहते हैं। यह है कि भविष्य की परिचालन आय (EBIT) अनिश्चित होती है अर्थात कितने अच्छे तरीके से परिचालन आय का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। व्यावसायिक जोखिम को मूल अर्जन शक्ति अनुपात (Basic Earning Power Ratio) के प्रमाप विचलन द्वारा मापा जा सकता है।

वित्तीय जोखिम फर्म के अंशधारकों पर अतिरिक्त जोखिम को दर्शाता है जो ऋण के उपयोग के परिणामस्वरूप होती है अर्थात् अंशधारकों पर अतिरिक्त जोखिम तब होती है जब एक कम्पनी वित्त पोषण में इक्विटी अंशों के अतिरिक्त ऋणों का उपयोग करती है। अधिक ऋणों के उपकरणों को निर्गमन करने वाली कम्पनी में ज्यादा इक्विटी या पूरी इक्विटी से वित्त पोषण करने वाली कम्पनी की तुलना में अधिक वित्तीय जोखिम होती है। वित्तीय जोखिम का मापन, फर्म के उत्तोलक गुणक, कुल ऋण का सम्पत्तियों से अनुपात और वित्तीय उत्तोलक मात्रा से किया जा सकता है। एक कम्पनी की जोखिम वित्तीय जोखिम से बनी होती है जो ऋण एवं जोखिम से जुड़ी होती है तथा जो सामान्यतया आर्थिक वातावरण से जुड़ी होती है। यदि कम्पनी में पूर्ण रूप से इक्विटी वित्त पोषण है तो इसमें लगभग कोई वित्तीय जोखिम निहित नहीं होगी लेकिन ये व्यापार जोखिम या समग्र आर्थिक वातावरण में परिवर्तन के लिए अति संवेदनशील होगी।

(स) मुद्रा स्फीति बॉण्ड और फ्लोटिंग दर बॉण्ड : मुद्रास्फीति बॉण्ड, वे बॉण्ड होते हैं जिनमें ब्याज दर में मुद्रा स्फीति दर का समायोजन किया जाता है। अतः निवेशक को प्राप्त ब्याज मुद्रास्फीति के प्रभाव से मुक्त होता है। उदाहरण के लिए, यदि ब्याज दर 11 प्रतिशत है और मुद्रास्फीति की दर 5 प्रतिशत है, निवेशक 16 प्रतिशत अर्जित करेगा अर्थात निवेशक को मुद्रास्फीति के विरुद्ध सुरक्षित किया गया है।

फ्लोटिंग दर बॉण्ड जैसा कि नाम सुझाया गया है, ऐसे बॉण्ड होते हैं जिनमें ब्याज दर स्थायी नहीं होती और दरों में बाजार की स्थिति के अनुसार परिवर्तन करने की अनुमति होती है। यह बाजार में ब्याज दरों में होने वाले उतार–चढ़ाव के विरुद्ध निर्गमनकर्ता द्वारा स्वयं को सुरक्षित (Hedge) करने का एक आदर्श उपकरण है। यह एक मुद्रा बाजार के उपकरण के रूप में अधिक लोकप्रिय है और वित्तीय संस्थानों जैसे IDBI, ICICI आदि ने सफलतापूर्वक जारी किये हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India